दशलक्षण महार्च्चना

मंगल आशीर्वाद
प० पू० अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी
आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

लेखक
मुनि प्रज्ञानंद

सम्पादक
युगल मुनि
श्रद्धानंद एवं पवित्रानंद मुनि

कृति -
दशलक्षण महार्चना

मंगल आशीर्वाद
प० पू० अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी
आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

लेखक
मुनि प्रज्ञानंद

सम्पादक
युगल मुनि
श्रद्धानंद एवं पवित्रानंद मुनि

संस्करण - प्रथम 2021

प्रतियाँ - 500

मूल्य - सदुपयोग

प्राप्ति स्थान
निर्ग्रन्थ ग्रन्थ माला समिती
ई० 102 केशर गार्डन
सै० 48 नोएडा-201301
मो. 9971548889
9867557668

मुद्रण व्यवस्था
अलंकार प्रकाशन

शुभाशीष

–प.पू. आचार्य श्री वसुनंदी मुनि

यत्फलं तपसा नास्ति, न योगेनं समाधिना।

तत्फलं लभते सम्यक्-जिनेन्द्र तव कीर्तिनात्॥

जो फल तप, योग व समाधि से भी प्राप्त नहीं होता है उस फल की प्राप्ति 'जिनेन्द्र भगवान्' की भक्ति, वंदना, स्तुति आदि से होती है।

सम्यक्त्व के पराग से परिपुष्ट जिनाराधना का पुष्प जिस भव्य जीव के चित्त में विकसित होता है उसका जीवन तो निःसंदेह आत्मोपकारक होता ही है साथ ही साथ परहित में भी उसका जीवन निमित्त बन जाता है। जिनाराधना एवं निर्ग्रंथ सेवा की परंपरा सतत् प्रवाही सरिता के समान अनादि काल से प्रवाहमान है। अनंत भव्यजीवों ने इन दो चरणों के माध्यम से न केवल तीन रत्नों को प्राप्त किया है अपितु तीन लोक का साम्राज्य प्राप्त करने में भी समर्थ हुए। संप्रति दुषमा नामक पंचमकाल भरतादि क्षेत्रों में प्रवर्तमान है इस युग में जिनाराधना भव सुख व शिव सुख की अचूक पगदंडी की तरह से सिद्ध होती है। जो कोई भी भव्यवर पुंडरीक जिनेंद्र भगवान् की स्वपरिणामों को निर्मल बनाने हेतु अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, भक्ति, स्तुति आदि करते हैं वे अपने चित्त से पाप पंक का प्रक्षालन करके सातिशय पुण्य के अनिर्वचनीय दिव्य रत्न प्राप्त करते है।

जिनेंद्र भगवान् की विशिष्ट गुणानुवाद रूप निबद्ध महापूजन व विधानादि भव्य जीवों के नव जीवन निर्माण के संविधान के

प्रतीक ही हैं। विधान में संलग्न चित्त उसी प्रकार तृप्ति को प्राप्त होता है जिस प्रकार निर्धन अकूत धन पाकर, क्षुधातुर यथेच्छ भोजन पाकर, तृषातुर अमृतोपम जल पाकर, दरिद्र निःसीम वैभव पाकर, रोगी सर्वारोग्य पाकर।

बाल योगी प्रज्ञा श्रमण अनगार श्री प्रज्ञानंद मुनिराज की पुण्यवर्द्धिनी वर्णवर्तिका/लेखनी स्वयं के परिणामों की निर्मलता का तो हेतु है ही व अन्य भव्यजनों के पुण्य का व परंपरा से मुक्ति का कारण भी है। उनके चित्तानंदनी लेखनी से प्रसूत श्री दशलक्षण इत्यादि विधान जिनानुयायी श्रावक-श्राविकाओं के लिए पुण्य संग्रह/संचय में निमित्त बन रहे हैं उनके जीवन में सम्यक् ज्ञान, ध्यान, तपादि की वृद्धि निरंतर होती रहे। जिनाराधना संयम-साधना उनके जीवन को सफल व सार्थक करे। एतदर्थ उन्हें समाधिवृद्धि शुभाशीष. ....

सभी आराधक, उपासक व पाठकगण इसके माध्यम से लाभान्वित हों। एतदर्थ धर्मवृद्धि शुभाशीष.....

ॐ अर्हं नमः

पुरोवाक्

सांसारिक दु:ख से संतप्त प्राणी जिन भक्ति की शीतल धारा में अवगाहन करके जिस सुख-शांति व शीतलता का अनुभव करता है वह अनिर्वचनीय है। जीवात्मा पर पड़ती हुई प्रभु भक्ति की धारा का परिणाम मालिन्य एवं विधि कल्मष को दूर करने में समर्थ है। आचार्य भगवन् श्री वादीभसिंह सूरी ने तो भक्ति को मुक्ति रूपी कन्या से परिणय हेतु शुल्क निर्दिष्ट किया है। यथा–

श्रीपतिर्भगवान्पुष्याद्, भक्तानां वः समीहितम्।
यद्भक्तिः शुल्कतामेति, मुक्तिकन्याकरग्रहे॥

अन्तरंग व बहिरंग लक्ष्मी के अधिपति जिनेन्द्रदेव सब भक्तों की इच्छा पूर्ण करें। जिस प्रकार किसी कन्या के साथ विवाह करने में धन सहायक होता है, उसी प्रकार जिनभक्ति मुक्ति रूपी कन्या को प्राप्त करने में सहायक होती है।

महा पूजा, अर्चना, विधान जिनभक्ति हेतु प्रधान निमित्त हैं। अन्य सामान्य दिनों की अपेक्षा किसी पर्व आदि विशेष दिवस में सामूहिक रूप से पकवान मिष्ठान्नादि का भोग कर आनंद की प्राप्ति होती है उसी प्रकार अष्टान्हिका, सोलहकारण, दशलक्षणादि पर्व में विधान कर भव्यों का चित्त प्रफुल्लित होता है। विधान के शब्द निःसंदेह भक्त-भगवान् में एक्य स्थापित करने के निमित्त होते हैं। वे पौद्गलिक शब्द मानो मूर्तिमान व अमूर्तिमान् के बीच का सेतु ही बनते हों।

प्रतिवर्ष चैत्र, भाद्रपद व माघ माह में आने वाले दशलक्षण पर्व भव्यों के हृदय सरोजों को उसी प्रकार विकसित करते हैं जिस

प्रकार दिवाकर की रश्मियाँ सरसी रूहों को विकसित करती है। उस ही प्रफुल्लित चित्त से भव्य जीव भक्तिभाव पूर्वक जिनेन्द्र प्रभु के चरणों में पहुँचकर भक्ति स्तुति हेतु तत्पर होता है। वही जिनपूजा उसके लिये अतिशय पुण्य का हेतु होती है।

प्रस्तुति कृति 'दशलक्षण विधान' परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज के आदर्श शिष्य मुनि श्री प्रज्ञानंद जी महाराज द्वारा रचित है। यह विधान अनुपम शब्द मणियों से गुंथित माला के समान है। पूज्य गुरुवर श्री की लेखनी चाहे संस्कृत, प्राकृत, हिंदी या किसी भी भाषा में चले वह तो सदैव अनुपम व शब्दातीत ही होती हैं। उन्हें यदि कलम का जादूगर भी कहूँ तो अतिशयोक्ति न होगी। प्राकृत में लगभग प्रत्येक विषय पर त्रिंशत्याधिक ग्रंथ का लेखन कर जो कीर्तिमान स्थापित किया वह अभूत पूर्व है।

उन्हीं की छत्रछाया में रहने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले हमारे अग्रज मुनि श्री प्रज्ञानंद जी मुनिराज भी गुरु के अनुभव व उपदेशों को प्राप्त करते हुए जिस प्रकार अविच्छिन्न लेखन कर रहे हैं। वह निः संदेह श्लाघनीय व अनुकरणीय है। उनके द्वारा लिखित प्रत्येक विधान भव्य को भक्ति रूपी सरिता में अवगाहन हेतु प्रेरित करता है। काव्य रचना की जो कला उन्होंने पूज्य गुरुदेव से प्राप्त की है वह अभिवंदनीय है। पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से 'दशलक्षण विधान' के संपादन का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। इस विधान के संपादन में त्रुटि रह गई हो तो पूज्य गुरुदेव हमें क्षमा करें। विद्वत्जन संशोधित कर पढ़ें।

गुरु चरण सेवक
युगल मुनि
श्रद्धानंद-पवित्रानंद

अनुक्रमणिका

क्र० सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	मङ्गलाष्टकम्	01
2.	विधान की प्रारंभिक क्रियाएं	03
3.	अभिषेक पाठ (संस्कृत)	08
4.	अभिषेक पाठ (हिन्दी)	13
5.	श्री शान्तिधारा	17
6.	विनय पाठ इत्यादि	21
7.	नव देवता पूजन (आ. वसुनंदी मुनि)	28
8.	प्रस्तावना	32
9.	समुच्चय दस लक्षण पूजन	34
10.	उत्तम क्षमा धर्म पूजन	38
11.	उत्तम मार्दव धर्म पूजन	46
12.	उत्तम आर्जव धर्म पूजन	54
13.	उत्तम शौच धर्म पूजन	61
14.	उत्तम सत्य धर्म पूजन	69
15.	उत्तम संयम धर्म पूजन	77
16.	उत्तम तप धर्म पूजन	85
17.	उत्तम त्याग धर्म पूजन	93
18.	उत्तम आकिंचन धर्म पूजन	101
19.	उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पूजन	109
20.	समुच्चय जयमाला	117
21.	समुच्चय महार्घ्य एवं विसर्जन	119
22.	पर्युषण पर्व महिमा	123
23.	दशलक्षण पर्व आरती	125
24.	निर्वाण कांड	126
25.	अर्घावली	129
26.	पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी पूजन	132

दशलक्षण महार्चना

मॉडना

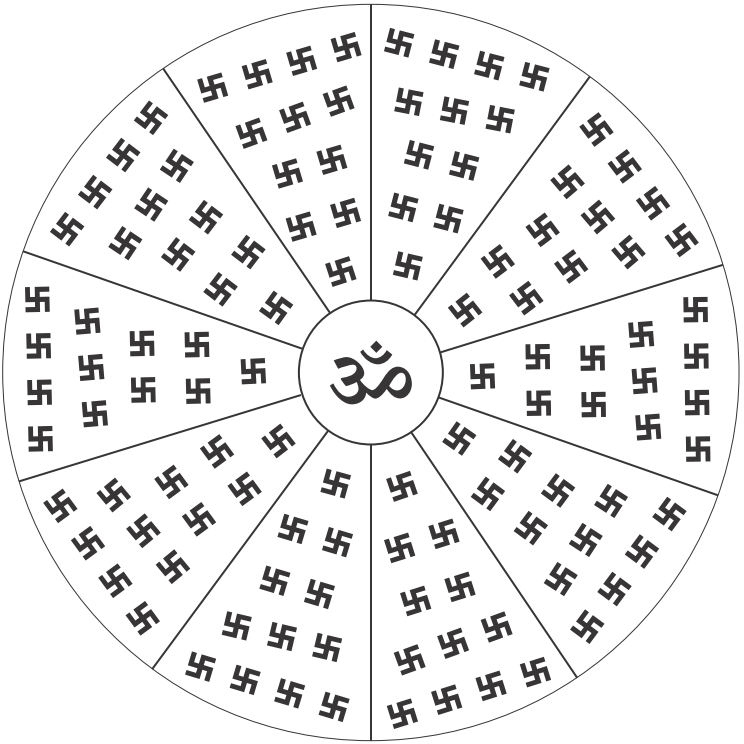

मङ्गलाष्टकम्

(शार्दूलविक्रीड़ितम् छन्द)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥१॥

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट-प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥३॥

नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रिभुवन, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशलायेऽष्टौ-वियच्चारिणः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥५॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥८॥

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य - सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि॥९॥

॥इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम्॥

विधान की प्रारम्भिक क्रियाएँ

अमृतस्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें)

तिलक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/यजमानस्य सर्वांगशुद्धि- हेतवे नव तिलकं करोम्यहम्॥

(1. शिखा 2. मस्तक 3. ग्रीवा 4. हृदय 5. दोनों भुजाएँ 6. पीठ 7. कान 8. नाभि 9. हाथ। (इन नौ स्थानों पर तिलक लगाये)

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशः आगत-विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशःआगत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशःआगत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा। (सात बार पुष्प क्षेपण करें)

रक्षा-मन्त्र

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्दि छिन्दि परमंत्रान् भिन्दि भिन्दि वाः वाः क्षः क्षः ह्रूं फट् स्वाहा।

(तीन बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्य-तेजो-मूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय, सर्व-रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृच्छ्रद्रोपद्रव-नाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्वारिष्ट शान्तिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सात बार पढ़कर पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

भूमि शुद्धि मन्त्र

ॐ शोधयामि भूभागं, जिनधर्माभिरुत्सवे।
काल-धौतोज्ज्वल स्थूलं, कलशापूर्ण वारिणी॥

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थनाथाय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्रजलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

पात्र शुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(पूजा के सभी बर्तन मंत्रित जल के छीटें लगाकर शुद्ध करें)

द्रव्यशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं इ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रजलेन शुद्धपात्र-निक्षिप्त-पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्ध करें)

सकलीकरण

(अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतालाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

अंगशुद्धि (दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

शरीर पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

वस्त्र पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

पूजन द्रव्य पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

स्थान निरीक्षण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वजगत की रक्षा के लिए जल सिंचन करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

दाहिने हाथ में रक्षासूत्र बाँधें

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों को धारण करना।

जलशुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म-तिगिंच्छकेसरि-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि जलं सुवर्ण घटं प्रक्षिप्तं-

सर्वगन्धपुष्पाढ्य- ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

(मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगादिफलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्रीफल रखने का मन्त्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्माणि वीरनिर्वाणसंवत्सरे.....मासे.....पक्षे..... .तिथौ..... वासरे.....प्रशस्तलग्ने नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतबीजपूरादिशोभितं.....कार्यस्य निर्विघ्नसम्पन्नार्थं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मंडल के ईशान कोण में कलश स्थापित करें)

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

माला शुद्धि

ॐ ह्रीं रत्नैः स्वर्णैः सूतैर्बीजैः रचिता जपमालिका सर्वजपेषु वाञ्छितानि प्रयच्छन्तु।

माला (जाप) को प्रासुक जल से धोकर थाली में स्वस्तिक बनाकर उसमें रखें और उक्त मंत्र को ७ बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें।

।।अभिषेक पाठ।।

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्नताऽमर शिरस्तटरत्नदीप्तिः,
तोयाऽवभासि चरणाम्बुजयुग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत-पद-प्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेक-विधिं करिष्ये।।१।।

अथ पौर्वाह्निक-देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-स्तव-वन्दना-समेतं श्री-पञ्च-महागुरु-भक्तिपूर्वकम् कायोत्सर्गं करोम्यहं।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

(वसन्ततिलका)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाः जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि।।२।।

अथ जिनाभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें।)

(उपजाति)

श्री-पीठ-क्लृप्ते, विशदाक्षतौघैः, श्री-प्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्क-कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्ता, सत्यापयन्तीं, श्रियमालिखामि।।३।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि।

(अनुष्टुप)

कनकादिनिभं कम्रं, पावनं पुण्यकारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिन-स्नपनाय भक्तितः।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार-चामर-सुदर्पण-पीठ-कुम्भ, तालध्वजा-तपनिवारक-भुषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जय पीठपदावलीभिः, सिंहासने जिन! भवन्तमहंश्रयामि॥५॥

(अनुष्टुप)

वृषभादि-सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्! पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ।

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत्-स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराऽब्धिवारिभिरपूरयदर्थ-कुम्भान्।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथाऽर्हणीयान्,
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रान्॥७॥

(अनुष्टुप)

शातकुम्भीय-कुम्भौघान्, श्रीराब्धेस्तोयपूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्॥८॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द-निर्भर-सुर प्रमदादि-गानैः,
वादित्र-पूर-जय-शब्द-कल-प्रशस्तैः।
उद्गीयमान-जगतीपतिकीर्तिमेनां,
पीठ-स्थलीं वसु-विधाऽर्चनयोल्लसामि॥९॥

ॐ ह्रीं स्नपन-पीठ-स्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

कर्म-प्रबन्ध-निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम्।

त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव !
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थकस्व॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनेन्द्रमाभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुप)

तीर्थोत्तम-भवैनीरैः क्षीर-वारिभि-रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्मान्तान्, जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(यह पढ़ते हुए कलश से धारा प्रतिमाजी पर छोड़ें)

(मालिनी)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर चारों कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करें।)

(वसन्ततिलका)

पानीय-चन्दन-सदक्षत-पुष्पपुञ्जैः
नैवेद्य-दीपक-सुधूप-फलव्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन-वीर-मनन्त-शक्तिं,
संपूजयामि सहसा महसां निधानम्॥१३॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

हे तीर्थपा! निजयशोधवलीकृताशा,
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम्।
सद्भव्यहृज्जनितपङ्कजबन्धकल्पाः,
यूयं जिनाः सततशान्तिकरा भवन्तु॥१४॥

(यह पढ़कर शान्ति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें)

(वसन्ततिलका)

नत्वा मुहूर्निज-करै-रमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र ! तव चन्द्रकराऽवदातैः।
शुद्धांऽशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान्जलकणान्परिमार्जयामि॥१५॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमाजी को पोंछें)

(वसन्ततिलका)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचनो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टिमिन ! तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि।

(अनुष्टुप)

जलगन्धाऽक्षतैः पुष्पैश्चरुसुदीपसुधूपकैः,
फलैरर्घ्यैर्जिनमर्चे, जन्म-दुःखा-पहानये॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च, व्याप्तं क्षणेन हरतादधसञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्, भूयाद् भवाऽतपहरं धृतमादरेण॥१८॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं, पुण्याङ्कुरोत्पादकम्;
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्र-चक्र-पदवी, राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता, संवृद्धि-सम्पादकम्,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गन्धोदकम्॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते, सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं, कृति-जनगणाऽदेयमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा, दशुभवसुकर्माऽटनमभूत्,
सदेदृक् पुण्यार्हन् ! मम भवतु ते पूजनविधौ॥२०॥

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़ें)

जलाभिषेक वा प्रक्षाल-पाठ

(प्रक्षाल करते समय पढ़ना चाहिये।)

दोहा

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान॥

(ढाल– मंगल की) (छंद–अडिल्ल और गीता)

श्री जिन जगमें ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू॥
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण है त्रिभुवनधनी॥
अनुपम अमित तुम गुणनि-वारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं हम उर कोष में सो अकथ-गुण-मुणि राश है॥
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम में ही शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातैं नाम ही में भक्ति है॥1॥

ज्ञानावरणी दर्शन, आवरणी भने।
कर्म मोहनी अंतराय चारों हने॥
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इंद्रादिक के मुकुट नये सुरथान में॥
तब इन्द्र जान्यो अवधितैं, उठि सुरन-युत वंदत भयो।
तुम पुन्यको प्रेरयो हरी ह्वै मुदित धनपतिसों कह्यो॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपदको करो।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरो॥2॥

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपति।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयो।
दे प्रदच्छिना बार बार वंदत भयो॥

अति भक्ति-भीनो नम्र-चित ह्वै, समवशरण रच्यौ सही।
ताकी अनूपम शुभ गतीको, कहन समरथ कोउ नहीं॥
प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजहीं।
नग-जड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं॥3॥

सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।
तापर वारिज रच्यौ प्रभा दिनकर छिपै॥
तीन छत्र सिर शोभित चौसठ चमरजी।
महा भक्तियुत ढोरत हैं तहां अमरजी॥

प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यही वीतराग दशा प्रतच्छ विलोकि भविजन सुख लिया।
मुनि आदि द्वादश सभा के भविजीव मस्तक नाय के।
बहुभांति बारंबार पूजैं, नमैं गुणगण गाय के॥4॥

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं॥
जन्म जरामृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे॥

श्रमबिना श्रमजलरहित पावन अमल ज्योति-स्वरूपजी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी॥
ऐसे प्रभू की शांतिमुद्रा को न्हवन जलतैं करें।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति तैं हम भानु ढिग दीपक धरें॥5॥

तुम तो सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो।
महा मलिन तन में वसु-विधि-वश दुख सह्यो॥

बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिता-हर एक तुम ही, भरहु बांछा चित ठई॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोष-रागादिक हरो।
तनरूप कारा-गेहतैं उद्धार शिव वासा करो॥6॥

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त राग-वर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही।
नय-प्रमानतैं जानि महा साता लही॥

पापाचरण तजि न्हवन करता चित्त में ऐसे धरूं।
साक्षात श्री अरहंत का मानों न्हवन परसन करूं॥
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभबंध तैं।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतैं ह्वै शर्म सब विधि तासतैं॥7॥

पावन मेरे नयन, भये तुम दरसतैं।
पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतैं।
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतैं॥

पावन भई परजाय मेरी, भयो मैं पूरण-धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी॥
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींव शिव-घर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुंभ भर भक्ती करी॥8॥

विघन-सघन-वन-दाहन-दहन प्रचंड हो।
मोह-महा-तम-दलन प्रबल मारतण्ड हो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि संज्ञा धरो।
जग-विजयी जमराज नाश ताको करो॥

आनंद-कारण दुख-निवारण, परम-मंगल-मय सही।
मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यो नहीं॥
चिंतामणी पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नवका जे चढ़े, ते भये भवदधि-पार ही॥9॥

दोहा

तुम भवदधितैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्तिको, हमैं उतारो पार॥10॥

(॥इति हरजसराय कृत अभिषेक पाठ॥)

श्री शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्व ग्रहारिष्ट शांति कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/शांतिधारा कर्ता का नाम.... सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः ह्रूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यधवनि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य- शोभनपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्यष्टसहिताय बीजाष्टमण्डन-मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणबंभयारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायद्णाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीर वढ्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

जस्संतियं धम्मपहं णियंच्छे, तस्संतयं वेणइयं पउं जे।
कायेण वाचा मणसा विणिच्चं, सक्कारएतं सिरपंच मेण।

तब भक्ति-प्रसादाद्लक्ष्मी-पुर-राज्य-गेह-पद-भ्रष्टोपद्रव-दारिद्रोद् भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्भवोपद्रव-शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धिरहितोपद्रवा णां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। श्रेष्ठी श्री..... .....सर्वेषां पुष्टिरस्तु। सृष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। श्री सद्धर्मबलायुरा-रोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णकल्याणं मंगलरूप-मोक्ष-पुरुषार्थश्च भवतु।

प्रध्वस्त-घातिकर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिः वृषभाद्यः जिनेश्वराः॥

उपजाति छन्द

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः॥
॥इति शांतिधारा॥

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥
मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण-भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥८॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलें आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग-कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप समान॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा ! हा ! डूबो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥१॥

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वंदूँ स्वयमेव॥२॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदूँ मन वच काय॥३॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥४॥

या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत॥५॥

॥इति मंगल पाठ॥

पूजा-विधि प्रारम्भ्यते

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।
ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवललिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धाम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपिवत्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते॥१॥

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स, बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥

अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥

एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं॥४॥

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म - वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥५॥

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यतम्॥६॥

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनअष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनवांङमहं यजे॥४॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेंद्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशम्।
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्॥
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैकहेतुर्।
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय।
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय॥
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ् मयाय।
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥

स्वस्त्युच्छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय॥
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥

द्रव्यस्य शुद्धि - मधिगम्य यथानुरूपं।
भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्।
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।४।।

अर्हन् पुराण पुरुषोत्तम पावनानि।
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।।
अस्मिन्न्वल-द्विमल-वेन्वल-बोधवह्नौ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।५।।

ॐ विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति-मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांस स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधान।

।।पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

(प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वास्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंङ्घावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गगण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषांविषा दृष्टिविषांविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

॥इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

नवदेवता पूजन

(आ० वसुनंदी मुनि)

स्थापना

(छंद–गीतिका/हरिगीतिका)

त्रलोक्य में तिहुँ काल में, नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक, साधु मुनिवर नंदिता॥
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत, जिन धर्म कल्याणक महा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा॥

दोहा

नवदेवों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर, लहूँ उभय साम्राज॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निाहितो भव भव वषट् सन्निाधिकरणं।

अष्टक (छंद–हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालयेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन-ताप हारक चंदनं,
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के,
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं,
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुध नाशती,
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।
संसार नव विधिा नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गगन आँगन में चमकते ज्योति ग्रह सम दीप हैं,
विधि मोहनी के नाश हेतु, आये आप समीप हैं।

संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दुःख नाशती,
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधि परकाशती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये,
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना,
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतु, भक्तिरस में मैं सना।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः

(नौबार उक्त मंत्र पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

जयमाला

छंद-लक्ष्मीधरा

देव सर्वज्ञप्राणी सदा मंगलं, नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।
प्रतिहार्य युतं वीतरागं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥१॥
सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा, अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥२॥
दर्श और ज्ञान चारित्र संपोषकं, संघ संचालकं सूरि आराधकं।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥३॥
हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो, भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥४॥
राग द्वेषादि को साधु संहारते, देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥५॥
भेद दो श्रावका और साधू कहा, तारता धर्म संसार से है अहा।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्मं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥६॥
देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही, गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥७॥
सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है, भक्ति करके बनेंगे वे मुक्तिकांत हैं।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥८॥

घत्ता

अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक दिग्वासी।
श्रीचैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता अविनाशी॥
वसु कर्म नशाए, वसुगुण पाए, वसु वसुधा को नित्य लहे।
वसुभूमि सभा की, सिद्ध रमा की, वसुनन्दी भी शीघ्र गहे॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अर्हत् आदि नवदेवता, सदा करे उश्वास।
पुष्पांजलि चढ़ाय के, पाऊँ मोक्ष निवास॥

(शान्तये... शांतिधारा पुष्पांजलि क्षिपामि)

प्रस्तावना

दोहा

शाश्वत चिन्मय भाव हैं, सर्व जीव हितकार।
दशलक्षण हैं धर्म के, करें भवोदधि पार।।

तर्ज : जिसने रागद्वेष कामादिक .....

श्री अरिहंत सकल परमातम, भवि जीवन मंगलकारी।
मन-वच-काया से भक्ति वश, नमन सदा जग हितकारी।।1।।
नय प्रमाण युत द्रव्य तत्त्व अरु, अर्थ रूप को प्रकटाया।
भव पतितों को वृष पथ देकर, परमारथ सुख दर्शाया।।2।।
दस धर्मों की निधियाँ अनुपम, जिसके हृदय समाई हैं।
तिहुँ जग की उत्कृष्ट ऋद्धियाँ, वहाँ सिमट कर आई हैं।।3।।
दशलक्षण वृष व्रत जो करते, वो नर उत्तम कहलाते।
इसीलिए दस विध धर्मों की, पूजन कर अति हर्षाते।।4।।
धरम ही मंगल धरम ही उत्तम, धरम ही शाश्वत शरणा है।
वृष तरणी पर चढ़ो भाव से, भवदधि से यदि तरना है।।5।।
धर्म कल्पतरु की छाया में, सुख पाता है हर प्राणी।
धर्म बिना न कोई साथी, सच कहती माँ जिनवाणी।।6।।
चैत्र, माघ, भादव की शुक्ला, पंचम तिथि है सुखकारी।
युगारम्भ में दस दिन करते, सुर वृष अर्चन अघहारी।।7।।
मम मन में भी भाव जगे हैं, पूजन अर्चन करने के।
दशलक्षण ही सच्चे साधन, भव वारिधि से तरने के।।8।।

आतम को शृंगारित करते, दस धर्मों के आभूषण।
धर्म रसायन से ही मिटते, चेतन के सारे दूषण।।9।।
सद्धर्मामृत पान जीव का, करता है सम्यक् पोषण।
दूषण तज भूषण चित धारो, जिय पोषक है पर्यूषण।।10।।

दोहा

दस लक्षण वृष पूजिए, नित्य त्रियोग सम्हार।
वसु कर्मों से मुक्त हो, लहो मुक्ति का द्वार।।

स्थापना

समुच्चय दसलक्षण पूजन

चाल : नवदेवता पूजन अष्टक

उत्तम क्षमा प्रीति करे, मार्दव मिटाता मान है।
आर्जव धरो चित कर सरल, शुचि भाव ही विज्ञान है॥
वाणी सरस सतरूप हो, संयम धर्म की शान है।
है विधि विनाशक त्याग तप वृष, शील ढाल समान है॥
लक्षण यही जिस चित बसे, मानो धरम मंदिर वही।
संसार दु:ख से जो उबारे, है धरम मंगल सही॥
आतम बने परिशुद्ध मेरी, जा वसूँ वसुभू निलय।
दस विध धरम चित में वसे, वसुविध जजूँ विधि हों विलय॥

दोहा

भव शिवसुख का मूल है, दसविध धरम सुसार।
मन-वच-तन से पूजता, दसलक्षण उर धार॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥ अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)॥

अष्टक

(छंद-ज्ञानोदय छंद) (चाल-अनादिकाल से जग में.....)

क्षीरोदधि के निर्मल जल से, कंचन झारी भर लाया।
योगत्रय से त्रय धार चढ़ा, त्रय रोग नशे ये मन भाया॥
चेतन के हैं दस प्राण रूप, दसलक्षण जग विख्यात कहे।
दस धर्मों को पूजूँ प्रतिपल, जो भवि को भव से तार रहे॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

शीतल चंदन के कलश लिए, वृष लक्षण के गुण गाऊँगा।
भव ताप विनाशक अर्चन कर, नर भव को सफल बनाऊँगा।।
चेतन के हैं दस प्राण रूप, दस लक्षण जग विख्यात कहे।
दस धर्मों को पूजूँ प्रतिपल, जो भवि को भव से तार रहे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्यो नमः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

है धर्म जीव का चिर साथी, है धर्म ही अक्षय पद दाता।
शुभ धवल अखंडित तंदुल ले, जोडूँ धर्मों से चिर नाता।।
चेतन के हैं दस प्राण रूप, दस लक्षण जग विख्यात कहे।
दस धर्मों को पूजूँ प्रतिपल, जो भवि को भव से तार रहे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

पुष्पों की कोमलता जग में, जनमन को सदा लुभाती है।
सुमनों से वृष पूजन करके, विषयों की चाह मिट जाती है।।
चेतन के हैं दस प्राण रूप, दस लक्षण जग विख्यात कहे।
दस धर्मों को पूजूँ प्रतिपल, जो भवि को भव से तार रहे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्यो नमः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिनधर्म ही आतम का भोजन, आध्यात्म शक्ति का संवर्धक।
नैवेद्य लिए लक्षण अर्चूं, क्योंकि वृष पथ ही सुख वर्धक।।
चेतन के हैं दस प्राण रूप, दस लक्षण जग विख्यात कहे।
दस धर्मों को पूजूँ प्रतिपल, जो भवि को भव से तार रहे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दीपों से जग रोशन होता, अन्तर जग रोशन धर्म करे।
इस हेतु दिव्य नीराजन ले, वृष गुण गाकर शिवशर्म वरें।।
चेतन के हैं दस प्राण रूप, दस लक्षण जग विख्यात कहे।
दस धर्मों को पूजूँ प्रतिपल, जो भवि को भव से तार रहे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्यो नमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

दस गंध हुताशन में खेकर, दस धर्म हृदय में धारूँगा।
जग कल्याणी, वृष पूजन कर, कर्मों की धूप जलाऊँगा।।
चेतन के हैं दस प्राण रूप, दसलक्षण जग विख्यात कहे।
दस धर्मों को पूजूँ प्रतिपल, जो भवि को भव से तार रहे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

वृष कल्पतरु शाखा पर ही, शाश्वत मुक्ति फल लगते हैं।
श्री फल से वृष तरुवर जज हम, शुभ भक्ति रस में पगते हैं।।
चेतन के हैं दस प्राण रूप, दस लक्षण जग विख्यात कहे।
दस धर्मों को पूजूँ प्रतिपल, जो भवि को भव से तार रहे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्योनमः महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

वसुविध उत्तम शुभ द्रव्य लिए, उत्तम क्षमादि धर्मांक जजूँ।
वसु वसुधा पर शाश्वत बसकर, वसुगुण भूषण से नित्य सजूँ।।
चेतन के हैं दस प्राण रूप, दस लक्षण जग विख्यात कहे।
दस धर्मों को पूजूँ प्रतिपल, जो भवि को भव से तार रहे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जयमाला

दोहा

दस लक्षण वृष पूजिए, आतम हित के काज।
धारो जीवन में प्रमुख, जो चाहो शिवताज॥

चौपाई

धर्म यही शिवमग की ज्योति, इस बिन मुक्ति कभी न होती।
भाव सहित धारे जो प्रानी, धर्म बने उसको वरदानी॥
उत्तम क्षमा भाव चित लाओ, जनम जनम के बैर मिटाओ।
उत्तम मार्दव धर्म निराला, मान दलन कर दे शिवशाला॥1॥
उत्तम आर्जव सरल बनावे, कपट नशा शिव पथ दर्शावे।
उत्तम शौच धर्म अघहारी, धर संतोष भाव सुखकारी॥
उत्तम सत सम्मान दिलाता, संतों की पहचान कराता।
उत्तम संयम यम संहारी, नर भव सफल करो नरनारी॥2॥
उत्तम तप सब कर्म नशावे, आतम को परिशुद्ध बनावे।
उत्तम त्याग पाप मल धोता, त्यागी पुण्य बीज नित बोता॥
उत्तम आकिंचन वृष धारो, स्वर्ग, मोक्ष, सुख, अचल निहारो।
उत्तम ब्रह्मचर्य जो धरते, मुक्ति वधु से परिणय करते॥3॥

दोहा

वंदूँ दसविध धर्म महा, निर्मल चित्त बनाय।
धर्म कल्पतरु छाँव में, भवाताप नश जाए॥

पूर्णार्घं–ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदसलक्षणधर्मेभ्यो नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

सोरठा

सुख पद्म विकसाय, जिस उर वृष दिनकर बसे
आतम गुण मिल जाए, धर्म बिना जिय हो दुखी
शान्तये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

उत्तम क्षमा धर्म पूजा

स्थापना

(छंद-अडिल्ल) (चाल–नेमि का शहरा सुहाना...)

सब जीवों से क्षमा भाव नित धारकर,
क्षमा धर्म पूजूँ उर भक्ति भाव धर।
सर्व धर्म का सार क्षमा वृष जानिए,
थापि जजूँ फिर उत्तम फल तव मानिए॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तमक्षमाधर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)॥

(छंद : हरिगीतिका) (तर्ज–नवदेवता पूजन.....)

शुभ नीर निर्मल कुंभ भरि, अर्चूं क्षमा उत्तम सदा।
नश जाए जन्म जरा मरण, भव भव भ्रमण न हो कदा॥
यह धरम उत्तम क्षमा, तीनों लोक में जयवंत हो।
भूषण क्षमा जो धारते, वो वीर ही शिवकन्त हों॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

केसर सुमिश्रित दिव्यचंदन, ले जजूँ उत्तम क्षमा।
विगलित करे जो ताप भव, हो आतमा परमातमा॥
यह धरम उत्तम क्षमा, तीनों लोक में जयवंत हो।
भूषण क्षमा जो धारते, वो वीर ही शिवकन्त हों॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥

उत्तम अखंडित धवल सुरभित, दिव्य अक्षत पुंज ले।
अक्षय निधि के हेतु पूजूँ, अग्र वृष चित कुंज से॥
यह धरम उत्तम क्षमा, तीनों लोक में जयवंत हो।
भूषण क्षमा जो धारते, वो वीर ही शिवकन्त हों॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

अलि वृंद गुंजित पुष्प, नाना विध लिए निज हाथ में।
निष्काम हो शिवधाम पहुँचूँ, धर्म बल हो साथ में॥
यह धरम उत्तम क्षमा, तीनों लोक में जयवंत हो।
भूषण क्षमा जो धारते, वो वीर ही शिवकन्त हों॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

नाना सुमिष्ट मनोज्ञ व्यंजन, भूख क्षणभर की नशें।
वृष क्षमा बंधु जो जजैं, फिर स्वस्थ हो शिवपुर बसें॥
यह धरम उत्तम क्षमा, तीनों लोक में जयवंत हो।
भूषण क्षमा जो धारते, वो वीर ही शिवकन्त हों॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ले ज्योत्सना सम दिव्य दीप, जजूँ प्रथम वृष गुणन को।
तज मोहतम की श्रृंखला, लहूँ ज्योति केवल परम जो॥
यह धरम उत्तम क्षमा, तीनों लोक में जयवंत हो।
भूषण क्षमा जो धारते, वो वीर ही शिवकन्त हों॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोहाधंकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

दस विध सुगंधित धूप खेऊँ, अनल में विधि हनन को।
अग्रिम धरम सेऊँ मैं सम्यक्, दुःखमय भव तरन को॥

यह धरम उत्तम क्षमा, तीनों लोक में जयवंत हो।
भूषण क्षमा जो धारते, वो वीर ही शिवकन्त हों।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

संसार के हैं फल विफल, वृष भक्ति से हों फल सफल।
षटऋतु फलों से पूजता, जिसका कि प्रतिफल मोक्षफल।।
यह धरम उत्तम क्षमा, तीनों लोक में जयवंत हो।
भूषण क्षमा जो धारते, वो वीर ही शिवकन्त हों।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

संजोय वसुविधि द्रव्य उत्तम, जजूँ क्षमा उत्तम धरम।
पद को अनर्घ करूँ सफल भव, नित रहूँ प्रभू की शरण।।
यह धरम उत्तम क्षमा, तीनों लोक में जयवंत हो।
भूषण क्षमा जो धारते, वो वीर ही शिवकन्त हों।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम क्षमा धर्म अर्घावली

(अडिल्ल छंद) (तर्ज– सोलह कारण भाए तीर्थंकर.....)

पृथ्वीकायिक जीवों के संकट हरूँ।
उनके रक्षण हेतु क्षमा उर में धरूँ।।
पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनितपृथ्वीकायिकजीवसंरक्षणाय स्वपरउत्तमक्षमा धर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जलकायिक दुख पूरित अघ फलते रहें।
आतम रक्षण काज क्षमा उनमें बहे।।

पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनितजलकायिकजीवसंरक्षणाय स्वपरउत्तमक्षमाधर्म धारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अगनिकाय के संरक्षण का भाव है।
क्षमा रखूँ नादि से दिया जो घाव है।।
पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनितअग्निकायिकजीवसंरक्षणाय स्वपरउत्तमक्षमा धर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मम प्रमाद वश वनस्पति को कष्ट जो।
क्षमा रहे उनसे जो वो संतुष्ट हों।।
पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनितवनस्पतिकायिकजीवसंरक्षणाय स्वपरउत्तमक्षमा धर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है अपराध जो कीनी पवन विराधना।
करुणा भाव रहे सच्ची आराधना।।
पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनित वायुकायिकजीवसंरक्षणाय स्वपरउत्तमक्षमाधर्म धारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

लट आदिक दो इन्द्रिय का दुख जानिए।
इन पर करुणाधार क्षमा मन ठानिए।।

पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनितदोइन्द्रिय जीवसंरक्षणाय स्वपरउत्तमक्षमाधर्म धारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

चींटी आदिक ते इन्द्रिय का दुख घना।
क्षमा करें मुझको निमित्त जो हूँ बना।।
पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनितत्रीन्द्रियजीवसंरक्षणाय स्वपरउत्तमक्षमाधर्म धारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

चउ इन्द्रिय अलि आदि जीव पीड़ा भरें।
इनका दुख लखि मुनिगण चित करुणा धरें।।
पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनितचतुरेन्द्रियजीवसंरक्षणाय स्वपरउत्तमक्षमाधर्म धारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मन बिन पंचेन्द्रिय प्राणी दुख भोगते।
क्षमा भाव धर छूटें भवि भव रोग तें।।
पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनितअसंज्ञीपंचेन्द्रियजीवसंरक्षणाय स्वपरउत्तम क्षमाधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

संज्ञी नर नारक अरु पशु गति देव जू।
क्षमा धार नित सौख्य लहूँ स्वयमेव जू।।

पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादिजनित संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव संरक्षणाय स्वपरउत्तमक्षमा धर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अविनाशी अविकारी अविचल धीर हैं।
क्षमा करें वे सिद्ध प्रभु भव तीर हैं।।
पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसिद्धपरमेष्ठिनेप्रति उत्तमक्षमाधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

विषय कषायों से पीड़ित मम आतमा।
स्वातम में धरि क्षमा बनूँ परमातमा।।
पूजूँ उत्तम क्षमा धरम जग सार है।
क्षमा सभी जीवों से बारंबार है।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वात्मप्रतिउत्तमक्षमाधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

समुच्चय महार्घ

(तर्ज– वीर हिमाचल ते निकसी.....)

क्रोध अनल गुण कोष जलाकर, आतम को भव ताप दिलावै।
पाप ताप संताप बढ़ाकर, चारों गति में भ्रमण करावैं।
उत्तम धर्म क्षमा यश कीरत, वृद्धि करें सब बैर मिटावैं।
ऐसे आत्म स्वरूपी वृष से, भूषित नर वसुगुण उपजावैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमक्षमाधर्मांगाय नमः सम्पूर्ण महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप्यमंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमक्षमाधर्मांगायनमः।।

जयमाला

दोहा

प्रथम धरम उत्तम क्षमा, कोटि यज्ञ आधार।
तिस महिमा वरणन करूँ, अल्पमति विस्तार॥

(चालः-शेर चाल) (तर्ज-जय जय श्री अरिहंत देव.....)

जन्मों के बैर भाव नाश प्रीति बढ़ावै।
उत्तम क्षमा धरम वही निर्दोष कहावै॥
दुर्जन करें उपसर्ग कष्ट घोर करावै।
समता का भाव धार मुनि आत्म रिझावैं॥1॥
वचनों का कर कटाक्ष शब्द निंद उचारी।
अपशब्द का प्रहार करें घोर दुखारी॥
कर्मज समझ धरें क्षमा निज आत्म विहारी।
ऐसे क्षमा मुनीश को है धोक हमारी॥2॥
सब प्राणियों पें नित्य क्षमा भाव जो लाता।
वीरों में वीर वो ही महावीर कहाता॥
उत्तम क्षमा संयुक्त ही शिव सौख्य है पाता।
इस हेतु क्षमा धर्म से नित जोड़ता नाता॥3॥
उत्तम क्षमा ही तात मात बंधु व भाई।
संसार नीर से उबारने में सहाई॥
जिन भव्य जनों ने क्षमा से प्रीत लगाई।
अन्तर व बाह्य श्री से हुई उनकी सगाई॥4॥
है क्रोध सम ना शत्रु कोई तीन लोक में।
जिसके प्रहार से दुखी हो, चित्त शोक में॥
तजैं क्षमा सुनीर से विधि पंक नशाऊँ।
सबके प्रति क्षमा धरूँ लोकाग्र सिधारूँ॥5॥

दोहा

सब जीवन को क्षमा करूँ क्षमा करें सब मोय।
मैत्री हो सब जीव से, बैर धरे नहीं कोय॥

पूर्णार्घ–ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तमक्षमाधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

क्षमा वृक्ष सुखकार, पूजूँ मन वच काय से।
करें सुख विस्तार, जो नर क्षमा धरम गहै॥
शान्तये शांतिधारा ।।दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

उत्तम मार्दव धर्म पूजन

(छंद गीतिका) (तर्ज-नव देवता पूजन)

स्थापना

(तर्ज-नवदेवताओं की सदा जो.....)

करता विनय के भाव अब, उर आ बसे मार्दव धरम।
निज मान मर्दन हो लहूँ, आतम रचित शाश्वत शरम।।
मार्दव धरम उत्तम कहा, मुनिगण जिसे चित धारते।
दूजै धरम धारी तरें, औ दूसरों को तारते।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तममार्दवधर्म! अत्रअवतरअवतरसंवौषट् आह्वाननम्।। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्रमम्सन्निहतो भवभववषट् (सन्निधिकरणम्।)।।

(छंद ज्ञानोदय छंद) (तर्ज–शायद प्रभु की भक्ति का.....)

जल से तन मल धुलता लेकिन आतम को न निर्मल करता।
मुनि मन सम निर्मल जल लेकर, पूजूँ वृष भव संतति हरता।।
मार्दव वृष उत्तम गुण गाकर, मन से अभिमान मिटाऊँगा।
ले विनय भाव का आलंबन, त्रैलोक्य शिखर चढ़ जाऊँगा।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तममार्दवधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

भक्ति के रंगों से मिश्रित, लेकर आया शीतल चंदन।
भव का संताप मिटाने अब, मार्दव वृष को करता वंदन।।
मार्दव वृष उत्तम गुण गाकर, मन से अभिमान मिटाऊँगा।
ले विनय भाव का आलंबन, त्रैलोक्य शिखर चढ़ जाऊँगा।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

भौतिक पद में मद मस्त हुआ, मार्दव वृष ना स्वीकार किया।
अक्षय पद हेतु अक्षत का, पूजन हेतु शुभ पुंज लिया।।
मार्दव वृष उत्तम गुण गाकर, मन से अभिमान मिटाऊँगा।
ले विनय भाव का आलंबन, त्रैलोक्य शिखर चढ़ जाऊँगा।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

विषयों के विष से भ्रमित हुआ, विश्वास न खुद का कर पाया।
अब निज स्वभाव में आने को, सुरभित अरु दिव्य सुमन लाया।।
मार्दव वृष उत्तम गुण गाकर, मन से अभिमान मिटाऊँगा।
ले विनय भाव का आलंबन, त्रैलोक्य शिखर चढ़ जाऊँगा।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

नाना विध षट्रस युत व्यंजन, कर में ले पूजन करता हूँ।
इस क्षुधा रोग के हनन हेतु, वृष भक्ति हृदय नित धरता हूँ।।
मार्दव वृष उत्तम गुण गाकर, मन से अभिमान मिटाऊँगा।
ले विनय भाव का आलंबन, त्रैलोक्य शिखर चढ़ जाऊँगा।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

है दीप शिखा सम शुभ स्वरूप, मम आतम का ऊपर जाना।
दीपों से अर्चन करता हूँ, हो सिद्धों सम मेरा वाना।।
मार्दव वृष उत्तम गुण गाकर, मन से अभिमान मिटाऊँगा।
ले विनय भाव का आलंबन, त्रैलोक्य शिखर चढ़ जाऊँगा।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनायदीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

कर्मों की ज्वाला में कब से, झुलसा मम सिद्धों सम चेतन।
ले धूप दशांगी वृष अर्चूं, विचरूँ स्वतंत्र फिर मुक्ति गगन।।
मार्दव वृष उत्तम गुण गाकर, मन से अभिमान मिटाऊँगा।
ले विनय भाव का आलंबन, त्रैलोक्य शिखर चढ़ जाऊँगा।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय अष्टकर्मदहनायधूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

श्री फल से पूजन करने का, शिवफल इक प्रतिफल कहलाता।
इस हतु उत्तम फल लेकर, पूजूँ वृष उत्तम फल दाता।
मार्दव वृष उत्तम गुण गाकर, मन से अभिमान मिटाऊँगा
ले विनय भाव का आलंबन, त्रैलोक्य शिखर चढ़ जाऊँगा।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

नीरादिक वसुविध दरब मिला, मार्दव पथ को अपनाया है।
मन में अनर्घ पद चाह लिए, सर्वोत्तम अर्घ चढ़ाया है।।
मार्दव वृष उत्तम गुण गाकर, मन से अभिमान मिटाऊँगा।
ले विनय भाव का आलंबन, त्रैलोक्य शिखर चढ़ जाऊँगा।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीउत्तममार्दवधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम मार्दव धर्म अर्घावली

(चाल– कहाँ गए चक्री जिन जीता/तेरी छत्रछाया...)

आत्मज्ञान बिन शब्दज्ञान का, छाया मद भारी।
तत्त्वज्ञान से मान नाश बन, केवल बुध धारी।।
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीज्ञानमदविनाशनाय उत्तममार्दवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

क्षणिक पुण्य से पूज्य बना है, तो मद क्यों ठाने।
क्षण भंगुर सब नम्र भाव धर, जो सद्गति पानें।।
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूजामदविनाशनाय उत्तममार्दवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पिता भूप हों तो किंचित भी, कुल मद ना करना।
कर्माधीन जान फिर चित में, विनय भाव धरना।।
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुलमदविनाशनाय उत्तममार्दवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मातुल नृप होने पर मद, जाति का अघकारी।
विनय रहित प्राणी की होती, नीच गति भारी।।
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं जातिमदविनाशनाय उत्तममार्दवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तन बल कब हो जाए निर्बल, पाप कर्म बल से।
मद तज आतम बल प्रकटाओ, छूटो भव जल से।।
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं बलमदविनाशनाय उत्तममार्दवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ऋद्धि सिद्धि नाना विद्या, शाश्वत ना कोई।
क्षणिक लब्धि पर मद न ठाने, तो शिवसुख होई॥
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्धिमदविनाशनाय उत्तममार्दवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

तप विधि नाशक शस्त्र सबल है, कहती जिनवाणी।
पर मद युक्त जो तप धारें तो हो आतम हानी॥
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं तपमदविनाशनाय उत्तममार्दवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सुंदर तन में अज्ञानी जन, मद बुद्धी धरते।
बोधि ज्ञान धर नश्वर तन में ज्ञानी सुख वरते॥
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं रूपमदविनाशनाय उत्तममार्दवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

देव विनय

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, दोष रहित स्वामी।
जिन पद वंदों विनय भाव युत, हो सब मद हानी॥
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं अरिहंतदेवप्रतिविनयभाव प्राप्तयेउत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शास्त्र विनय

जिन गिरि निसृत सरस्वती माँ भविजन कल्याणी,
विनय युक्त निज हृदय बसाकर होय अमर प्राणी॥
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनवचप्रतिविनयभावप्राप्तये उत्तम मार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

गुरु विनय

गुरु निर्ग्रन्थ सुरासुर वंदित, रत्नत्रयधारी।
तिनपद वंदों भक्तिभाव युत, जो अघ मदहारी॥
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनगुरुप्रतिविनयभावप्राप्तये उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

धर्म विनय

धर्म अहिंसा परम जगत में अवर नहीं शरणा।
जिन वृष नमन करूँ मद हरिकै है भवदधि तरणा॥
मान महाविष रूप मनुज को, दुर्गति का दाता।
उत्तम मार्दव मान मिटाये दे, सब सुख साता॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मप्रतिविनयभावप्राप्तये उत्तममार्दवधर्मांगायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

समुच्चय महार्घ्य

(तर्ज– वीर हिमाचल ते निकली...)

उत्तम मार्दव वृष अघहारी सद्गति कारक सिद्धी प्रदाता।
मान महागिरि चूर करे अरु गुण रत्नों का करण्ड कहाता॥

वस्तु स्वरूप विचार के जो भवि मार्दव धर्म हृदय में बसाता।
वसुविधि वर्जित वसुगुण मण्डित हो सब सिद्धों से जोड़े वो नाता।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तममार्दवधर्मांगायअनर्घ पदप्राप्तये सम्पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप्य मंत्र ।।ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम मार्दव धर्मांगाय नमः।।

जयमाला

दोहा

मार्दव गुण अनमोल है, मान समान न दोष।
धर्म जीव का सुख करें, पावें गुणनिधि कोष।।

चौपाई

मार्दव विनय भाव परकासै, मान घटा दुर्गुण को नाशै।
मार्दव सकल दोष परिहारी, नमूँ नमूँ मार्दव अघहारी।।1।।
द्वितीय हो अद्वितीय कहता, इस सम नाहिं जग में त्राता।
मार्दव जगत मोक्ष सुखकारी, नमूँ नमूँ मार्दव अघहारी।।2।।
जो नर मार्दव पथ अनुगामी, हो सुर नर इंद्रों के स्वामी।
उत्तम मार्दव भवि मनहारी, नमूँ नमूँ मार्दव अघहारी।।3।।
यह उत्तम वृष मुनिगण धारें, आप तिरे और न को तारें।
मार्दववान वरे शिवनारी, नमूँ नमूँ मार्दव अघहारी।।4।।
धरम ये दूजा रत्न समाना, चिंतित सब फल देय महाना।
मार्दव वृष से हो मम यारी, नमूँ नमूँ मार्दव अघहारी।।5।।
मान मनुज को भ्रमण करावे, नरकादि के कुपथ दिखावे।
मार्दव मुक्ति वधु सखि प्यारी, नमूँ नमूँ मार्दव अघहारी।।6।।
अहं भाव न मन में रखना, आत्म गुणामृत यदि हो चखना।
मार्दव युत मुनि शिव मगचारी, नमूँ नमूँ मार्दव अघहारी।।7।।

विनय मुक्ति का द्वार कहाती, दुर्गति तज सद्गति पहुँचाती।
नम्र तरु ही हो फलधारी, नमूँ नमूँ मार्दव अघहारी॥8॥

दोहा

मन से मान मिटा सकूँ, लहूँ मार्दव धर्म।
विनय सहित वंदन करूँ, प्राप्त करूँ शिव शर्म॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तममार्दवधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

मान महाविष रूप, सर्व दुःखों का मूल है।
मार्दव धर्म अनूप, विनय पात्र गुण कोष है॥

(शान्तये..... शांतिधारा)

।इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

उत्तम आर्जव धर्म पूजन

(अडिल्ल छंद) (तर्ज–नेमि का सेहरा सुहाना)

स्थापना

उत्तम आर्जव धर्म जगत में सार है।
मोक्ष महल का ये ही सच्चा द्वार है॥
सरल भाव ही आतम का श्रंगार है।
थाप हृदय पूजूँ मन भक्ति अपार है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तमआर्जवधर्म अत्र अवतर अवतर संवौषट आह्वाननम्॥ अत्रतिष्ठतिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥ अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

छंद/चाल (परम गुरु हो, जय जय नाथ...)

क्षीरोदेधि का नीर सु लाय, जन्म मरण के रोग नशाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥
मन वच तन अति सरल बनाय, आर्जव वृष पूजूँ हर्षाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलचंदन तुरत घिसाय, पूजत भव संताप नशाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥
मन वच तन अति सरल बनाय, आर्जव वृष पूजूँ हर्षाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ्राक्षत के पुंज चढ़ाय, अक्षय पद का यही उपाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय।।
मन वच तन अति सरल बनाय, आर्जव वृष पूजूँ हर्षाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अलि गुंजित बहु पुष्प सजाय, अर्चत काम भाव नाश जाए।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय।।
मन वच तन अति सरल बनाय, आर्जव वृष पूजूँ हर्षाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

पूजों वृष नित चरूवर संग, नशे क्षुधादिक रोग भुजंग।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय।।
मन वच तन अति सरल बनाय, आर्जव वृष पूजूँ हर्षाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिवसनाथ सम उज्ज्वल ज्योत, पूजत मोह नशे सुख होत।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय।।
मन वच तन अति सरल बनाय, आर्जव वृष पूजूँ हर्षाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमआर्जवधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुवासित खेवें आज, कर्म काट लहि शिवपुर ताज।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥
मन वच तन अति सरल बनाय, आर्जव वृष पूजूँ हर्षाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फलादि उत्तम फल सार, जजत लहूँ झट मुक्ति द्वार।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥
मन वच तन अति सरल बनाय, आर्जव वृष पूजूँ हर्षाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआर्जवधर्मांगाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्यसंवार, अर्चत पद अनर्घ लहि सार।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥
मन वच तन अति सरल बनाय, आर्जव वृष पूजूँ हर्षाय।
जजूँ शिरनाय, जय जय धर्म सकल सुखदाय॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आर्जव धर्म अर्घावली

तर्ज–उमरिया रह गई थोड़ी....।

जब कपट भाव मन आवै, मन से दुष्कृत्य करावे।
आर्जव वृष हृदय वसाऊँ, परिणाम शुद्ध मन लाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनोदुष्प्रवृत्तिरहिताय उत्तमआर्जवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दुर्वचन जो मुख से बोले, वो प्राणी भव भव डोले।
आर्जव युत वचन उचारूँ, गुण वर्णन कर सुख धारूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचोदुष्प्रवृत्तिरहिताय उत्तमआर्जवधर्म प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जब हो तन की कुप्रवृत्ति, तब घटे आत्म की शक्ति।
आर्जव प्रवृत्त युत काया, दे सर्व सुखों की माया।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायदुष्प्रवृत्तिरहिताय उत्तमआर्जवधर्म प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

हो सहज भाव जब मन में, सुख होता तब चेतन में।
आर्जव वृष कपट मिटावै, त्रैयोग से पूज रचावै।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन:सहजताप्राप्तायउत्तमआर्जवधर्मधारणायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

हित मित प्रिय सहज हों वाणी, सुनकर सुख पावैं प्राणी
आर्जव वृष कपट मिटावै, त्रैयोग से पूज रचावै।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं वच:सहजताप्राप्तये उत्तमआर्जवधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

हो सहज प्रवृत्ति तन की, तव व्यथा मिटे चेतन की।
आर्जव वृष कपट मिटावै, त्रैयोग से पूज रचावै।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं काय:सहजताप्राप्तये उत्तमआर्जवधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

परिणाम सरल चित धारैं, वक्री मन निज गुण वारै।
आर्जव वृष के गुण गाऊँ, तिहुँ योगन सरल बनाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन:वक्रताविनाशनाय उत्तमआर्जवधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वचनामृत वक्र ना कीजे, निज वचन सरल कर लीजै।
आर्जव वृष के गुण गाऊँ, तिहुँ योगन सरल बनाऊँ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचःवक्रताविनाशनाय उत्तमआर्जवधर्मप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मायाचारी युत काया, जिसकी वो जग भरमाया।
आर्जव वृष के गुण गाऊँ, तिहुँ योगन सरल बनाऊँ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायःवक्रताविनाशनाय उत्तमआर्जवधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मन रहित सिद्ध अविकारी, उत्तम आर्जव वृष धारी।
वंदूँ त्रिभुवन के ईशा, ध्यावें मुनि देव नरेशा॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनःकर्मरहिताय सिद्धत्व प्राप्तये उत्तमआर्जवधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वच कर्म रहित सिद्धेशा, उत्तम आर्जव धर्मेशा।
चिन्मय चेतन चितधारी, चिद्रूप नमूँ शिवकारी॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचःकर्मरहिताय सिद्धत्वप्राप्तये उत्तमआर्जवधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नोकर्म विहीन जिनेश्वर, आर्जव वृष युत सिद्धेश्वर।
हे योग रहित योगीशा, वंदूँ नित सकल जिनेशा॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं नोकर्मरहिताय सिद्धत्वगुणप्राप्तये उत्तमआर्जवधर्मधारणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

समुच्चय महार्घं

(चाल– श्रीमत वीर हरे.....)

उत्तम आर्जव भाव धरो मन, उत्तम से उत्तम फलदायी।
धर्म धुरंधर भेष दिगंबर, धारी मुनि शिव पंथ सहाई॥
पूजूँ उन्हें उर भक्ति उदय से, जन्मों का सब पाप नशाई।
शाश्वत सिद्धी वधु परिणय कर, होवे सदा भवि त्रिभुवन राई॥

छल बल से नहिं काज सरे कोई, क्यों करते छल ओ भोले प्राणी।
कपटी मन को सरल बनाकर, पाओगे फिर शिवरजधानी।।
उत्तम आर्जव धर्म बसे उर, तो कहलाओगे सम्यक् ज्ञानी।
धर्म जजूँ यही सब सुखकारी, तजकर अघकारी मनमानी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआर्जवधर्मांगाय सम्पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप्यमंत्र ।। ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः।।

जयमाला

दोहा

कुटिल भाव मन ना धरें, सरल रहे परिणाम।
आर्जव धर्म प्रभाव तै, पहुँचे मुक्ति धाम।।

चौपाई

उत्तम आर्जव धरम प्रमाता, भवि को भव शिव संपति दाता।
निश्छल मन परमारथकारी, जय जय आर्जव वृष सुखकारी।।1।।
हृदय वसी यदि कपट खटाई, नीकी भी फीकी पड़ जाई।
धर्म खिलावैं यश फुलवारी, जय जय आर्जव वृष सुखकारी।।2।।
छल बल से कोई काम ना कीजै, मन वच देह सरल कर लीजै।
छली गहे दुर्गतिदुःख भारी, जय जय आर्जव वृष सुखकारी।।3।।
कुटिल भाव विष जब चढ़ जावै, आतम के सब गुणन नशावै।
आर्जव वृष गुण कोई प्रभारी, जय जय आर्जव वृष सुखकारी।।4।।
आर्जव भावों से वो रीता, जो जिनवाणी रस ना पीता।
अमृत की कर लो तैयारी, जय जय आर्जव वृष सुखकारी।।5।।
आर्जव सकल दोष को नाशै, भव सुख फिर शिव सुख परकाशै।
रहे धर्म से प्रीति हमारी, जय जय आर्जव वृष सुखकारी।।6।।
निज पर का जो भेद कराये, शिव पथ पर जो दीप जलाये।
आर्जव भाव वही गुणकारी, जय जय आर्जव वृष सुखकारी।।7।।

आर्जव वृष आरत विनशाता, धर्म शुक्ल का ध्यान कराता।
जिससे मिटते दोष विकारी, जय जय आर्जव वृष सुखकारी।।8।।

दोहा

सरल हृदय में ही वसे, सिद्ध रूप भगवान।
मोती में ज्यों सूत्र हो, गर हो छिद्र समान।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआर्जवधर्मांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

पावें जल स्थान, चाहे हो चट्टान दृढ़।
आर्जव जब उर आन, धारें उससे प्रीत सब।।

(शांतये..... शांतिधारा)

।।इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

उत्तम शौच धर्म

(तर्ज– श्रीमत वीर हरे.....)

स्थापना

उत्तम शौच धरम अति उज्ज्वल, आतम को परिशुद्ध बनावै।
पाप ताप संताप हरै, भवि जीवन में संतोष बढ़ावै।।
जिस मन शौच धरम दृढ़ साजै, सुरगण उनको शीश नवावै।
चौथा धरम उर मांहि बसाऊँ, तो चारों गति का दुख नश जावै।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम शौच धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)।।

(चाल– नीर गंध अक्षतान)

क्षीर अम्बु के भरे, हेम कुंभ लीजिए।
जन्म मृत्यु नाशने, तुरिय धर्म पूजिए।।
आत्म शुद्धि हेतु, नित्य शुद्ध भाव लायके।
धर्म शौच को जजूँ, सुगुण विधान गायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमशौचधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीत गोशीर गंध, चंदनादि संग ले।
भवाताप नाशने, पूजता नव अंग से।।
आत्म शुद्धि हेतु नित्य, शुद्ध भाव लायके।
धर्म शौच को जजूँ, सुगुण विधान गायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं शौचधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य अक्षतान पुंज, स्वर्ण थाल में भरूँ।
अक्षतों से पूजकर, सौख्य अक्षय वरूँ।।
आत्म शुद्धि हेतु, नित्य शुद्ध भाव लायके।
धर्म शौच को जजूँ, सुगुण, विधान गायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमशौचधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

दिव्य कल्पद्रुम सुमन, मन सुमन बनायके।
भरिके अंजुलि जजूँ, काम को नशायके।।
आत्म शुद्धि हेतु, नित्य शुद्ध भाव लायके।
धर्म शौच को जजूँ, सुगुण, विधान गायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमशौचधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

षटरसों से युक्त लें, अमृतोपमा चरू।
वेदनी क्षुधा अनादि, गुण वखान कर हरूँ।।
आत्म शुद्धि हेतु, नित्य शुद्ध भाव लायके।
धर्म शौच को जजूँ, सुगुण, विधान गायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमशौचधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दीप ज्योति से करूँ, सुधर्म पूत आरती।
मोह मल्ल को दलें, नंतज्ञान वारती।।
आत्म शुद्धि हेतु, नित्य शुद्ध भाव लायके।
धर्म शौच को जजूँ, सुगुण, विधान गायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमशौचधर्मांगाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

धूप धूम्र की सुगंध, धर्म गीत गा रही।
कर्म दल दलन निमित्त, भक्ति मन समा रही।।
आत्म शुद्धि हेतु नित्य, शुद्ध भाव लायके।
धर्म शौच को जजूँ, सुगुण विधान गायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमशौचधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

श्री फलादि श्रेष्ठ फल, से जजूँ वृष विमल।
भाव निर्मल किए, तो मिले सिद्ध दल।।
आत्म शुद्धि हेतु नित्य, शुद्ध भाव लायके।
धर्म शौच को जजूँ, सुगुण विधान गायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमशौचधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

जल फलादि द्रव्य शुभ, लाये अर्घावली।
पूजता सुभाव युक्त, अंत हो भवावली।।
आत्म शुद्धि हेतु नित्य, शुद्ध भाव लायके।
धर्म शौच को जजूँ, सुगुण विधान गायके।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमशौचधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम शौच धर्म अर्घावली

(चाल वंदे जिनवरम्.....)

तन स्वभाव से रोगी फिर भी, क्यों निरोग का लोभ करें।
रत्नत्रय औषध को सेओ, जो स्वातम के रोग हरे।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं आरोग्यलोभरहिताय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

यशवर्धन के लोभ जाल में, प्राणी पाप कमाता है।
उत्तम वृष गिरि पर चढ़ चेतन, त्रिभुवन में यश पाता है।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं यश:प्राप्तिलोभरहिताय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

लोक प्रतिष्ठा पदायुक्ति का, लोभ सदा ही दु:खदायी।
पावन वृष गर हृदय बसे तो, पूजे तिहुंजग शिरनाई।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पदप्रतिष्ठालोभरहिताय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

धन का लोभी तन मन खोकर, उभय लोक दुख भरता है।
संतोषी नित पुण्य कोष भर, शिवमग में पग धरता है।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं धनादिलोभरहिताय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मात तात सुत आदि स्वजन में, मोहित हो भव भ्रमण किया।
स्वाश्रित हो निज को ही जानूँ, स्वधन हेतु वृष नमन किया।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वजनेषुलोभनिवृत्यै: उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

परजन को निज जान नादि से, निज से मैं अनजान रहा।
पर को पर निज को निज जानूँ, लोभ नाश वृष भजूँ महा।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं परजनेषुलोभनिवृत्यैः उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम भोजन की इच्छा रख, भेद किया ना निश दिन का।
आत्मामृत का पान करूँ, अब चढ़ जाऊँ मुक्ति शिविका।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धी, अरिहंतों की है वाणी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमभोजनाकांक्षारहिताय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नाना भोगरू उपभोगों की, इच्छाओं का करूँ शमन।
आत्मगुणों को भोग निरंतर, अनुपम सुख का करूँ वरण।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं भोगोपभोगाकांक्षारहिताय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

श्वभ्र प्रदायक लोभ अनंतानुबंधी का अंत करूँ।
सम्यक् मणि से संभूषित हो, भव अनंत संक्लेश हरूँ।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानुबंधिलोभकर्मविनाशनाय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

लोभ अप्रत्याख्यान उदय से, भाव असंयममय होते।
भक्तियुत उत्तम वृष अर्चूं, जिससे भवि सब अघ धोते।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रत्याख्यानलोभकर्मविनाशनाय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

प्रत्याख्यान लोभ अघकारी, मुनि व्रत से जो करे विमुख।
जिनवर कथित धरम गुणगाऊँ, जिससे हो रत्नत्रय सुख।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करें चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यान लोभकर्मविनाशनाय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

निज स्वरूप से विचलित करता, लोभ संज्वलन कहलाये।
शुद्ध हृदय में धर्म बसे जो, केवल सुख पद दर्शाये।।
उत्तम शौच धरम नित पूजो, मन पवित्र करि भवि प्राणी।
धर्म करे चेतन की शुद्धि, अरिहंतों की है वाणी।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं संज्वलनलोभकर्मविनाशनाय उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

महार्घ्य

(चाल– वीर हिमाचल तै निकसी.....)

कर्मवशी सब नश्वर तन धन, वैभव परिजन हैं अघकारी।
चाह की आग दहे गुण अम्बुधि, पाए आतम भव दुखभारी।
तास धरो संतोष गुणामृत, शुद्ध करो मन नित अविकारी।
उत्तम शौच धरम आराधो, मुनि बन चेतन संत पुजारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तमशौचधर्मांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये सम्पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप्यमंत्र–ॐ ह्रीं श्री उत्तम शौच धर्मांगाय नमः।

जयमाला

दोहा

शौच धरम पावन सही, आतम निर्मल होय।
पूजे मन वचन काय युत, जा सम अवर न कोय॥

चाल-नरेन्द्र फणेन्द्र.....

धरम हिम गिरि से झरे सौख्य झरना।
है उसमें भी उत्तम धरम शौच शरणा॥
भावों को निर्मल से निर्मल बनाये।
धरम मानवों को यही तो सिखाये॥1॥
तृष्णा अनल में झुलसता है प्राणी।
करे मोह मद जान से आत्म हानि॥
हृदय कुंभ में धार संतोष पानी।
वरेगी तभी तो तुम्हें मुक्ति रानी॥2॥
सरब पाप विधि लोभ भू माहिं पलते।
कषायों के काटे ये आतम को दलते॥
तजो लोभ बैरी, धरम शौच धारो।
निजातम को तत्काल दुख से उबारो॥3॥
धरम शौच मुनिगण हृदय में बसायें।
तभी वो स्वयं सिद्ध का रूप पायें॥
संतों सा संतोष जीवन में आए।
यही भाव पूजन में हमने बनाए॥4॥
धरम दोष वर्जित करम पंक धोवै।
असंतोष आरत असंयम को खोवै॥
विषयों की ज्वाला है, भव भव जलाती।
धरम चिर सहाई, ज्यों दीया व वाती॥5॥

जल बिंदु सम हैं ये वैभव जवानी।
रहे स्वार्थपूरण जगत की कहानी।।
कहे भारती झूठे संबंध तोड़ो।
धरम शौच धर नाता आतम से जोड़ो।।6।।
इच्छा भुजंगों ने भव भव डसा है।
तभी जीव दुख बंधनों में फंसा है।।
अहं बैर छल लोभ मन से हटाओ।
करो चित्त निर्मल धरम शौच ध्याओ।।7।।

दोहा

शौच धरम चित शुद्ध करे, देता सौख्य अपार।
गाओ गुण इसके विमल, लहो शिवालय द्वार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तमशौचधर्मांगाय नमः अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

करो निर्मल भाव, उत्तम शौच प्रभाव से।
यही शिवपुर नाव, सच्चा सुख आधार ये।।
।।शान्तये शांतिधारा।। ।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

उत्तम सत्य धर्म

स्थापना

(चाल–कहाँ गए चक्री जिन जीता.....)

साँच समान ना धर्म जगत में, अवर नहीं देखा।
साँच परम वृष ब्रह्म रूप जो, बदले विधि लेखा।।
मध्य दीप सम उभय प्रकाशी, ज्ञानी का गहना।
सत्य धरम उर आन बसे, तब हो शिवपुर रहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तम सत्य धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)।।

चाल–रोम रोम से.....

निर्मल मुनि सम निर्मल जल ले, निर्मल भाव बनाऊँ।
पूज रचाकर जन्म मृत्यु की, संतति पर जय पाऊँ।।
सत्य धर्म सर्वोच्च कहाता, कहता ये जिनशासन।
इसके अनुशासन में मिलता, सिद्धालय का आसन।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

सत पूजन के हेतु सुरभित, चंदन घिस कर लाया।
चित संताप शमन का सच्चा, साधन ये मन भाया।।
सत्य धर्म सर्वोच्च कहाता, कहता ये जिनशासन।
इसके अनुशासन में मिलता, सिद्धालय का आसन।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

अक्षय पद की चाह में हम भी, सत्य धर्म को ध्याते।
धवल अखंडित अक्षत लेकर, अक्षय पुंज चढ़ाते।।
सत्य धर्म सर्वोच्च कहाता, कहता ये जिनशासन।
इसके अनुशासन में मिलता, सिद्धालय का आसन।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

विषय पुष्प में अलि बन फंसकर, भव भव मरते आए।
सत्य परागी हम मद नशने, पुष्पांजलि चढ़ाये।।
सत्य धर्म सर्वोच्च कहाता, कहता ये जिनशासन।
इसके अनुशासन में मिलता, सिद्धालय का आसन।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

क्षुधा विषैली आतम घाती, कब से डसती आई।
मिष्ट चरु से सत वृष पूजूँ, सुख की यही दवाई।।
सत्य धर्म सर्वोच्च कहाता, कहता ये जिनशासन।
इसके अनुशासन में मिलता, सिद्धालय का आसन।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ऐसा अनुपम दीप जलाऊँ, कहलाये संदीपन।
पूजूँ मोह महातम नाशूँ, ज्ञान का हो उद्दीपन।।
सत्य धर्म सर्वोच्च कहाता, कहता ये जिनशासन।
इसके अनुशासन में मिलता, सिद्धालय का आसन।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

धूप सुगंध हुताशन मांहि, खेऊँ सतपथ पाने।
विधि बंधन संबंध तोड़कर, शिव स्वरूप प्रकटाने।।
सत्य धर्म सर्वोच्च कहाता, कहता ये जिनशासन।
इसके अनुशासन में मिलता, सिद्धालय का आसन।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

सतफल ही शिवफल का दायक, ज्यों कल्याणी माता।
उत्तम फल ले अर्चन करता, जो शाश्वत सुखदाता।।
सत्य धर्म सर्वोच्च कहाता, कहता ये जिनशासन।
इसके अनुशासन में मिलता, सिद्धालय का आसन।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

वसु द्रव्यों का अर्घ बनाया, वसुगुण देने वाला।
जजूँ सत्य वृष मिलता झटपट, अक्षय पद सुनिराला।।
सत्य धर्म सर्वोच्च कहाता, कहता ये जिनशासन।
इसके अनुशासन में मिलता, सिद्धालय का आसन।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम सत्यधर्म अर्घावली

(चाल–श्री सिद्धचक्र का पाठ.....)

उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।टेक।।
है झूठ सर्व अघ का कारण, भव भव में देता दुख दारुण।
कर मृषाभाव नर भव न व्यर्थ गंवाई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वअसत्यविनाशनाय उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वृष सत्य समा कोई धर्म नहीं, सतवादी पावें मुक्ति मही।
भक्ति कर मन में सत्य ज्योति प्रकटाई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यधर्मप्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जो शब्द जहाँ पर रुढ़ रहें, है जनपद सत्य मुनीन्द्र कहें।
हो ना विरोध ये सत्य की महिमा गाई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं जनपदसत्यफल प्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

बहुजन से समादृत शब्द कहे, सम्मति सत्य जो हृदय गहे।
सतवादी प्राप्त करें त्रिभुवन प्रभुताई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मतिसत्यफलप्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जिन प्रतिमा में दिखते भगवन, स्थापन सत्य कहें मुनिजन।
इस सत्य रूप दर्शन से पाप नशाई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थापनासत्यफलप्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

व्यवहार चलाने नाम धरें, उस रूप गुणापेक्षा ना धरें।
है नाम सत्य इसको कहते जिनराई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं नामसत्यफलप्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पुद्गल के नाना गुण जानो, उनमें भी रूप प्रमुख मानो।
है रूप सत्य परमाण मुनीश्वर गाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं रूपसत्यफलंप्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कोई वस्तु अपेक्षाकृत छोटी, हल्की भारी लंबी मोटी।
ऐसी परतीति अपेक्षित सत्य कहाई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हंप्रतीत्यसत्यफलप्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जो कहे नयापेक्षित वाणी, व्यवहार सत्य वो परमाणी।
इस सत्य बिना व्यवहार चले न भाई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।

उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यवहारसत्यफलप्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अनुमान रूप जो शब्दागम, संभावित सत्य कहें मुनिजन।
ऋषि मुनियों ने वृष सत्य से सद्गति पाई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं संभावनासत्यफल प्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

भावों की महिमा उत्तम है, भावों से ही हो सुख गम है।
भावों से वस्तु शुद्धाशुद्ध कहाई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं भावसत्यफल प्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उपमान में उपमा का रहना, ज्यों राई को पर्वत कहना।
ये अनुपम उपमा सत्य जजों मन लाई,
विधिवत् पूजो सब भाई।।
उत्तम वृष सत्य महान, करें अघहान, जजें शिरनाई।
विधिवत् पूजो सब भाई।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं उपमासत्यफलप्राप्तये उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

समुच्चय महार्घ्य

(तर्ज– वीर हिमालय तै निकसि.....)

सत्य मध्य का वृष अति उत्तम, ज्यों देहरी पर दीप सुहाय।
सत्य धरम के परम उपासक, पूरव पुण्य संग में लाय।।
सत्य धर्म प्रचंड है, अग्नि सारे पातक शीघ्र नशाय।
प्रज्ञानंद सदा वृष वंदे, प्रज्ञामय आनंद मनाय।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये संपूर्ण महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप्यमंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः

जयमाला

दोहा

सत्पथ दर्शक वृष कहा उत्तम सत्य महान।
सत्य वचन हृदय धरो जो चाहो कल्याण।।

चौपाई

''सत्य धरम'' उत्तम जग माना, मोक्ष मार्ग में मित्र समाना।
''सत्य'' निलय कल्याण प्रदायी, भव्य जनों को नित्य सहाई।।
''सत्य धरम'' पालैं वो ज्ञानी, हो वो ही सर्वत्र प्रमानी।
''सत्य'' मनुज को अभय प्रदाता, रक्षक हो ज्यों कोई माता।।
''सत्य'' जीव को पूज्य बनाता, सुरपति भी आशीश नवाता।
''सत्य'' औषधि सब दुख हरनी, जजों सत्य वृष भवदधि तरणी।।
''सत्य धरम'' की चलै समीरा, आतम की जो हरती पीरा।
''सत्य खड्ग'' धारें भव योद्धा, कर्म दलन करते सद् बोधा।।
सत्यामृत का पान जो करते, अजर अमर बन सिद्धी वरते।
जन्मान्तर का क्लेश मिटाते, शाश्वत निज आनंद वो पाते।।
सतपथ पर जो कदम बढ़ाते, अध्यातम सर हंस कहाते।
यश दिन पर दिन उनका बढ़ता, सत्य शिखर पर जो पग धरता।।

सत वृष सब निधियों में उत्तम, जो धारे वो नर पुरुषोत्तम।
सत सिद्धांतों के हों ज्ञाता, भरे सकल सुख संपति साता।।

दोहा

सतपथ अनुगामी बनें, झूठ कर्म से दूर।
हर संकट में रहें अचल, बनें यशस्वी शूर।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसत्यधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

सत्य धरम संभाल, हित मित प्रिय बोलें सभी।
लहैं त्रिभुवन भाल, तिलक रूप मणि ज्यों सजे।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

उत्तम संयम धर्म

स्थापना (तर्ज– वीर हिमाचल तै निकसी.....)

आतम का धन संयम सौरभ, सुरगण जिसकी आश लगाते।
जिस बिन सार्थक ना हो नर भव, उस संयम के गुण हम गाते।।
षट्कायों की रक्षा करके, मन इन्द्रिय सब वस हो जाते।
ऐसे संयम वृष को अर्चूं, संयम के शुभ भाव बनाके।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम संयम धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)।।

(चाल– जल फल आठों शुचिसार.....)

क्षीरोदधि का शुभ नीर, कंचन कुंभ भरूँ।
हनूँ जन्म मरण की पीर, मनहर पूज करूँ।।
करता आतम श्रृंगार, संयम का गहना।
पाता वो मुक्ति द्वार, जिसने हो पहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

शीतल चंदन गुणसार, अर्चन को लाया।
विनशे भव आतप भार, हो संयम छाया।।
करता आतम श्रृंगार, संयम का गहना।
पाता वो मुक्ति द्वार, जिसने हो पहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

अर्केन्दु सम शुचि श्वेत, तंदुल पुंज लिए।
पूजूँ अक्षय पद हेत, संयम भाव किए।।

करता आतम श्रृंगार, संयम का गहना।
पाता वो मुक्ति द्वार, जिसने हो पहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय अक्षयदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

संयम की उड़े सुवास, महकाती चेतन।
जजूँ पुष्पों से मैं आज, मर्दित होय मदन।।
करता आतम श्रृंगार, संयम का गहना।
पाता वो मुक्ति द्वार, जिसने हो पहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं संयमधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

नाना विध नेवज शुद्ध, लीने मनहारी।
हो अर्चनमय मम बुद्धि भूख नशे सारी।।
करता आतम श्रृंगार, संयम का गहना।
पाता वो मुक्ति द्वार, जिसने हो पहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ले तमहर दीप विशेष, संयम गुण गाऊँ।
हो मोह तिमिर निश्शेष, केवल बुध पाऊँ।।
करता आतम श्रृंगार, संयम का गहना।
पाता वो मुक्ति द्वार, जिसने हो पहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ धूप अगरजा गंध, खेऊँ धूपायन।
खुल जायें सब विधि बंध, करके वृष अर्चन।।
करता आतम श्रृंगार, संयम का गहना।
पाता वो मुक्ति द्वार, जिसने हो पहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम उत्तम फल लाय, जजते वृष उत्तम।
संयम ही शिवफलदाय, जो है सर्वोत्तम।।
करता आतम श्रृंगार, संयम का गहना।
पाता वो मुक्ति द्वार, जिसने हो पहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

वसु दिव्य द्रव्य भर थाल, भक्ति उमंग भरी।
लहूँ लोक शिखर का भाल, चेतन शुद्ध करी।।
करता आतम श्रृंगार, संयम का गहना।
पाता वो मुक्ति द्वार, जिसने हो पहना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम संयम धर्म अर्घावली

(चाल/तर्ज मेरे यार सुदामारे.....)

नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।टेक।।
पृथ्वी कायिक की कर रक्षा, होगी तेरी आत्म सुरक्षा।
इनको कष्ट न होवे कोई, रक्षण भाव धरें शिव होई।।
अतिशय पुण्य कमाना रे ऽऽ.... भाई संयम गुण अपना के।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीकायिक-जीवसंरक्षण-रूप उत्तमसंयम धर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जितने हैं जलकायिक प्रानी, इनकी न हो मुझसे हानि।
पीते छाने बिन जो पानी, वो नर कहलाते अज्ञानी।।
दया का जल छलकाओ रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं जलकायिक-जीवसंरक्षणरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अग्नि कायिक जीव विचारे, मन से भी न जायें विदारे।
रक्षा का संकल्प निभाऊँ, इन जीवों के प्राण बचाऊँ।।
सम्यक् ज्योति जलाओ रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्निकायिक-जीवसंरक्षणरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वायुकायिक सब जीवन पे, करुणा भाव धरो निज मन से।
प्राणी संयम मुनिजन पालैं, रत्नत्रय की निधि सम्हालैं।।
बरसे आनंद आनंद रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं वायुकायिक-जीवसंरक्षणरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दस लख भेद वनस्पतिकायिक, भोगें अघफल नित दुखदायक।
इन जीवों का रक्षण करना, जन्मोंगे इनमें तुम वरना।।
सिद्धों के गुण गाओ रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं वनस्पतिकायिक-जीवसंरक्षणरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वे ते चउ पंचेन्द्रिय प्राणी, त्रस कायिक रक्षण कर ज्ञानी।
रहती इनमें भी जिन्दगानी, संयम से लहि शिव रजधानी।।
अहिंसा व्रत चित धारो रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रसकायिक-जीवसंरक्षणरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

आठ विषय स्पर्श न जानो, आसक्ति न इनमें ठानो।
गजसम दुख पाओगे वरना, अब तो सोच आत्महित करना।।
समय न व्यर्थ गंवाओ रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनइन्द्रियविजयरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रसना के रस लगें रसीले, इनको तज आतम रस पी ले।
ज्ञानामृत का स्वाद जो आए, अजर अमर वो सिद्धी पाये।।
पर से मोह घटा ले रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं रसनाइन्द्रियविजयरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

गंध विलेपन कर हर्षाये, दुर्गंधी में द्वेष बढ़ाये।
घ्राणेन्द्रिय के वश जो होते, अलि सम बन नरकों में रोते।।
निज से प्रीति लगाओ रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणेन्द्रियविजयरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

पंच विषय चक्षु संबंधी, इनका रंग चढ़े ना जल्दी।
मन के राग द्वेष सब धोलो, परिणामों में समता घोलो।।
आतम रंग में रंग लो रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं चक्षुरिन्द्रियविजयरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कर्णेन्द्रिय के सप्त विषय हैं, इनका राग सदा दु:खमय है।
अक्ष विषय से करो किनारा, चमकेगा तव भाग्य सितारा।।
निज संगीत सुनाओ रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्णेन्द्रियविजयरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

मन के मतैं चलो ना प्राणी, अब तो तज सारी मनमानी।
मुनिवर मन वश करि सुख पावें, निज आतम का ध्यान लगावैं।।
मन में धर्म बसाओ रे ऽऽ... भाई संयम गुण अपनाके।
नर भव सफल बनाओ रे ऽऽ....भाई संयम गुण अपनाके।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनविजयरूप-उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

समुच्चय महार्घ्य

(तर्ज– वीर हिमाचल तै निकसी.....)

कलियुग में भी जग हितकारी जिनमत का शुभ ज्ञान मिलता है।
आतम अनुभव हेतु नर भव जिन गुरु वच का प्रसून खिला है।।
कर्म रिपू से निज चेतन का रक्षक संयम धर्म किला है।
उत्तम संयम वृष अर्चन से पाते भविजन सिद्धशिला हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप्यमंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम संयम धर्मांगाय नम:

जयमाला

दोहा

संयम मुक्ति श्री सखी, यम संहारक शस्त्र।
पंचेन्द्रिय मन वश करूँ, दशों दिशा हों वस्त्र॥

(चाल–श्रीपति जिनवर करूणायतनं.....)

संयम नर भव का ताज प्रमुख, जीवन को जो सार्थक करता।
संयम बिन जीव सदा जग में, चारों गतियों के दु:ख भरता॥
उत्तम संयम उत्तम नर ही, उत्तम फल हेतु धरते हैं।
संयम की नौका चढ़ लाखों, भविजन भव वारिध तरते हैं॥1॥
जब सही वेदना नरकों की, क्षण भर भी चैन ना मिल पाया।
तिर्यंच गति में भार वहन बध बंधन दुक्ख ही अपनाया॥
जब मिला मनुज भव रूप रतन तब विषयों में खोई काया।
विधि भोग लही सुरगति न्यारी, ईर्ष्या भावों से अकुलाया॥2॥
धर भाव असंयम के जग में, जन्मा अरु यम का ग्रास बना।
अब नर भव रतन मिला दुर्लभ फिर भी विषयों में रहा सना॥
मणि कांचन में ये योग मिला नर तन अरु उत्तम जिनशासन।
शुभ भाव बने संयम पथ के जिससे पाऊँगा सिद्धासन॥3॥
तिहुँ लोक मांहि संयम दुर्लभ, इसकी महिमा सब गाते हैं।
जिसको पाने सुरपति गण भी, इंद्रासन को ठुकराते हैं॥
षट्काय जीव का सरंक्षण, अरु इंद्रिय मन को वश करना।
इस रूप धरे संयम निर्मल फिर अंतर से झरता झरना॥4॥
संयम यम का संहार करे, आतम बल विजय कराता है।
दृढ़ संयम पालन से चेतन, तीर्थंकर का पद पाता है॥
पूरण संयम मुनिजन पालें, श्रावक पे संयम अंशज है।
संयम से अलंकृत मानव ही, सच्चा सिद्धों का वंशज है॥5॥

दुर्लभ निगोद से थावर अरु, थावर से त्रस गति को पाना।
नर जन्मरू उत्तम द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव का मिल जाना।।
जिनश्रमण भारती की संगत, गुरुवाणी अमृत का संगम।
श्रावक कुल की मर्यादायें, अरु मुनियों का उत्तम संयम।।6।।

दोहा

संयम अनुपम तीर्थ है, भवदधि का दे कूल।
दया भाव सब पर धरो, चलो धर्म अनुकूल।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमसंयमधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

संयम सुमन सुवास, केवल नरभव में मिले।
लहो गुण मणि राश, आतम संयम से सजे।।
।।शान्तये शांतिधारा।। ।।दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

उत्तम तप धर्म

स्थापना

(चाल–शेर चाल) (तर्ज– जय-जय श्री अरिहंत देव.....)

विधि गिरि दलन के हेतु वज्र सम सुतप कहा।
तप बिन कभी ना आत्मा हो सिद्ध सम महा।।
ये जानि आत्म सिद्धि ठानि गुण सु गा रहा।
वृष तप सु श्रेष्ठ थापि आत्म सौख्य है लहा।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम तप धर्म अत्र अवतर-अवतर संवषोट् आह्वाननम्।। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। (सन्निधिकरणम्)।।

महानद सूवारि कनक घट भराऊँ।
महातप जजूँ जन्म सन्तत नशाऊँ।।
जजूँ धर्म उत्तम सुतप है महाना।
तपूँ द्विविधि युत लहूँ सिद्ध वाना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचंदन घिसा तप की भक्ति के माँहि।
भवाताप नाशे अवर और नाहिं।।
जजूँ धर्म उत्तम सुतप है महाना।
तपूँ द्विविधि युत लहूँ सिद्ध वाना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तामणि सम धवल अक्षतों को।
चढ़ाऊँ लहैं शीघ्र अक्षय पदों को।।
जजूँ धर्म उत्तम सुतप है महाना।
तपूँ द्विविधि युत लहूँ सिद्ध वाना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

लहें कल्पतरु के सुमन स्वर्णवर्णी।
जजूँ काम नाशन चढ़ूँ मोक्ष तरणी।।
जजूँ धर्म उत्तम सुतप है महाना।
तपूँ द्विविधि युत लहूँ सिद्ध वाना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लिए मोदकादि सुचरुवर सुहाने।
सदा अर्चता भूख अरि की नशाने।।
जजूँ धर्म उत्तम सुतप है महाना।
तपूँ द्विविधि युत लहूँ सिद्ध वाना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतन दीप में वार कर्पूर वाती।
करुँ आरती मोहतम को नशाती।।
जजूँ धर्म उत्तम सुतप है महाना।
तपूँ द्विविधि युत लहूँ सिद्ध वाना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दिशायें सुगंधित हुई धूप खेते।
जले तप अगन में बंधु कर्म जेते।।
जजूँ धर्म उत्तम सुतप है महाना।
तपूँ द्विविधि युत लहूँ सिद्ध वाना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

धरम की शरण में है मुक्ति ठिकाना।
इसी हेतु आया सुफल लेके नाना।।
जजूँ धर्म उत्तम सुतप है महाना।
तपूँ द्विविधि युत लहूँ सिद्ध वाना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी जल फलादि दरब को मिलाऊँ।
अरघ से अरच पद वो अनमोल पाऊँ।।
जजूँ धर्म उत्तम सुतप है महाना।
तपूँ द्विविधि युत लहूँ सिद्ध वाना।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तप धर्म अर्घावली

(चाल–मराठी, तर्ज-मुनीन्द्र पाद वंदन करूँ मैं नित ही)

टेक

तप मुनिधर्म का श्रेष्ठ गहना,
तप करके ही हो शुद्ध सोना।
मिला तप हेतु नर भव सलोना,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।टेक।।
चलों पूजें प्रथम तप अनशन,
त्याग चउविध अशन शुद्ध कर मन।
करने चारों कषायों का उपशम,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनशनतपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अवमौदर्य तप है सुन्यारा,
भूख से कम ले मुनिगण अहारा।
दूसरा तप जजूँ भाव द्वारा,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवमौदर्यतपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वृत्ति संख्यान करवेऊ मुनीश्वर,
लेते आहार घर-घर विधि धर।
ऐसो तप धन जजूँ पाऊँ शिवघर,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृत्तिपरिसंख्यानतपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जीह्वा का तजा स्वादा सारा,
करें मुनिराज नीरस अहारा।
लेवें निज आत्म रस का सहारा,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं रसपरित्यागतपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोयें या कोई आसन लगायें,
मुनि अविचल हो निज को दृढ़ावें।
शय्यासन सुतप तो संवारें,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं विविक्तशय्याशनतपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कायक्लेश करें मुनि न्यारे,
वृक्षमूल या नदिया किनारे।
आतापन में समता है धारें,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायक्लेशतपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जब परमादवश दोष लागै,
प्रायश्चित करैं दोष भागैं।
मुनि तप से ही कर्म खपावैं
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रायश्चिततपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि धारें विनय भाव मन में,
प्रत्यक्ष परोक्ष वे क्षण में।
गुण मिलें पूज्य जन की शरण में,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनयतपफलप्राप्तये उत्तम पधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तप साधन में होने सहाई,
मुनि सेवा करें मन लगाई।
वैयावृत्ति सदा सौख्यदायी,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्तितपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वाचन आदि करवेऊ मुनीन्द्रा,
स्वाध्याय करें तजवेऊ तन्द्रा।
जिनवाणी जजैं वे यतीन्द्रा,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वाध्यायतपफल प्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग कर देह से मोह ममता,
कायोत्सर्ग करें धार समता।
मुनि मन नित्य आतम में रमता,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायोत्सर्गतपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अविचल करें तीन योगा,
रौद्र आरत का करके वियोगा।
धर्म शुक्ल का लेते संजोगा,
मुनीन्द्र बन हम भी करें तप मन से॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानतपफलप्राप्तये उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(तर्ज-वीर हिमाचल तै निकसि.....)

कर्म अनादि बंधे निजचेतन, रंक समा संक्लेश उठाया।
विधि गिरि खंडन हेतु मुनिवर, मन माँहि उत्तम तप भाया॥
सर्व दोष परिहार करें अरु, चेतन को दे शिव सुख छाया।
ये तप सुरगण को भी दुर्लभ, तातैं पूजूँ तप सिर नाया॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशविध उत्तमतपधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये सम्पूर्ण महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम तप धर्मांगाय नमः॥

जयमाला

दोहा

तप अगनी संयोग से, हो विशुद्ध भवि जीव।
तप कर ही कंचन बने, तप शिवपुर की नींव॥

चाल–कचनेर पूजन (नहीं दोष अठारह हैं...) (हे चन्द्र प्रभु तुम.....)

सम्यक तप मुनियों का गहना, ये तप ही धर्मों में उत्तम।
तप की अग्नि में ही तपकर, आतम हो जाती परमातम॥
तप की महिमा जग में महान, गणधर आदि ने गाई है।
तीर्थंकर भी तप पथ चढ़ते, तब ही तो मुक्ति पाई है॥1॥
उत्तम तप शक्ति के सम्मुख, सुरगण भी शीश झुकाते हैं।
सम्यक् तप कल्पतरु पर ही, सिद्धी प्रसून खिल जाते हैं॥
तप के अनुपम सौरभ ने ही, मुनि आत्म महल महकाया है।
निज रत्नत्रय मंदिर शिख पर, तप कंचन कलश चढ़ाया है॥2॥
द्वादश विध भेद कहे तप के, छः अंतर छः बाहिर जानो।
अविचल होकर जो इन्हें तपे, तो निश्चित है सिद्धी मानो॥
आतम गुण रतन मिले जिसमें, कहलाता है वो तप सिंधू।
तप धारी ही आतम नभ में, लख पाता परमातम इंदू॥3॥
तप से ही विषय कषाय नशे, तप ही चेतन परिशुद्ध करे।
भव कूप पतन से बचने का, उत्तम तप ही सामर्थ्य धरे॥
तप बल से ही मानव के पग, सब ऋद्धि सिद्धियाँ आती हैं।
अभिशाप भरे नर जीवन में, प्रकृति वरदान लुटाती है॥4॥
त्रैयोग कषायों के द्वारा, आश्रव का द्वार खुला रहता।
कर्मों की कठपुतली बनके, ये चतुर्गति के दुःख सहता॥
जब तक ना मिले तप धरम विमल, ये निज स्वभाव से रहे विमुख।
यदि निज स्वभाव परिचायक हो, तब मिल पाएगा सच्चा सुख॥5॥

दोहा

तप आतम उज्ज्वल करें, करे कर्म का नाश।

उत्तम तप वृष पूज कर, करूँ शिवालय वास।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमतपधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

तप तेज परकाश, रवि सम आतम तम हरे।

होवे शिवपुर वास, इच्छा तज जो तप करे।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

।।दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

उत्तम त्याग धर्म

स्थापना

(छंद-चउ बोला) (तर्ज-धीरे धीरे पगिया धरती झम झम चाली...)

त्याग धर्म सर्वोच्च कहाता, त्याग ही भव शिव सुखदाता।
त्याग भाव युत जो जन धारे, उनको ही मिलती साता॥
स्वार्थ मुक्त सत्त्याग धरम को, निज आतम में धारूँगा।
समीचीन वृष पूजन करके, अपना भाग्य संवारूँगा॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम त्याग धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)॥

नयन नीर युत भक्ती जल से, वृष गुण पूज रचाते हैं।
जन्म जरा मृत्यु विनशाने, निर्मल भाव बनाते हैं॥
जिस वृष तरणी पर चढ़ मुनिगण, मुक्ति वधु परिणाते हैं।
ऐसे उत्तम त्याग धर्म को, हम सब शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयगिरि का शीतल चंदन, अर्चन हेतु समर्पित है।
संतापित चेतन शीतल हो, भाव यही मम अर्पित है॥
जिस वृष तरणी पर चढ़ मुनिगण, मुक्ति वधु परिणाते हैं।
ऐसे उत्तम त्याग धर्म को हम सब शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय संसारतापविनाशनायं चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत विक्षत है अक्ष विषय सब, त्याग धरम ही है शाश्वत।
अक्षय पद के हेतु जजूँ मैं, ले अखंड सित शुभ अक्षत॥
जिस वृष तरणी पर चढ़ मुनिगण, मुक्ति वधु परिणाते हैं।
ऐसे उत्तम त्याग धर्म को, हम सब शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल गुलाब चमेली चंपा, विविध भांति के सुमन मंगाय।
कामबाण विध्वंसन हेतु, पूजूँ त्याग धर्म मन लाय॥
जिस वृष तरणी पर चढ़ मुनिगण, मुक्ति वधु परिणाते हैं।
ऐसे उत्तम त्याग धर्म को, हम सब शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय कामबाणविनाशनायं पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वैद्य नहीं नैवेद्य जगत के, क्षुधा रोग जो समन करें।
उत्तम चरु से उत्तम वृष जो, पूजे वो शिवशरम वरें॥
जिस वृष तरणी पर चढ़ मुनिगण, मुक्ति वधु परिणाते हैं।
ऐसे उत्तम त्याग धर्म को, हम सब शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोघृत के शुभ दीप जलाकर, वृष गुण आरती नित्य करूँ।
सकल ज्ञान क्षायक प्रकटाने, मोह महामद मदन हरूँ॥
जिस वृष तरणी पर चढ़ मुनिगण, मुक्ति वधु परिणाते हैं।
ऐसे उत्तम त्याग धर्म को, हम सब शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर की धूप बनाकर, धूपायन में दहनाऊँ।
शुक्ल ध्यान से कर्म दहे मम, त्याग धरम जो अपनाऊँ॥
जिस वृष तरणी पर चढ़ मुनिगण, मुक्ति वधु परिणाते हैं।
ऐसे उत्तम त्याग धर्म को, हम सब शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति भाँति के मिष्ट मनोहर, फल समूह एकत्र किए।
शिवफल वांछक भविजन पूजे, त्याग भाव अंतस्थ लिए॥
जिस वृष तरणी पर चढ़ मुनिगण, मुक्ति वधु परिणाते हैं।
ऐसे उत्तम त्याग धर्म को हम सब शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल मिश्र किए।
अर्घ लिए पूजे वृष उत्तम, उत्तम पद के भाव लिए॥
जिस वृष तरणी पर चढ़ मुनिगण, मुक्ति वधु परिणाते हैं।
ऐसे उत्तम त्याग धर्म को, हम सब शीश झुकाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग धर्म अर्घावली

(छंद– नील छंद चाल– पिच्छी रे पिच्छी.....॥)

मुनिवर निज तप वर्धन हेतु, एक भुक्ति हैं करते।
दे आहार शुद्ध शुभ मन से, श्रावक निज गुण हरते॥
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं आहारदानफलप्राप्तये उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म उदय में कभी श्रमण के, नाना रोग सतावें।
देकर के औषध सम्यक् विधि, अपने कर्म खपावैं।।
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं औषधदानफलप्राप्तये उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान सदा आतम का भोजन, उभयलोक सुख दाता।
शास्त्र दान करके भवि प्राणी, केवलज्ञान है पाता।।
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानदानफलप्राप्तये उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम दिगंबर मुनि चरणों में, प्राणी निर्भय होता।
ऐसे मुनि के हेत वसतिका, देय जीव अघ खोता।।
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभयदानफलप्राप्तये उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वस्तु का हो वियोग, तो मोही आरत करता।
त्याग करें इह आर्त ध्यान तो, सम्यक् सुख को भरता।।
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं इष्टवियोगज-आर्त्तध्यान-विनाशनाय उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो अनिष्ट संयोग मनुज तब, आरत काहे होवे।
कर्म उदय को जान मुनीश्वर, निज साहस ना खोवै॥
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनिष्टसंयोगज-आर्त्तध्यान-विनाशनाय उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन पीड़ा का चिंतन तजकर, मुनि निज चित्त संवारै।
चेतन गुण चिंतन के द्वारा, विधि बल को संहारै॥
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं पीड़ाचिंतन-आर्त्तध्यान-विनाशनाय उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनाशीक भोगों की इच्छा, किंचित ना मन लाना।
तज निदान आरत को वरना, होगा भव दुःख पाना॥
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं निदान-आर्त्तध्यान-विनाशनाय उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसा में आनंद मनाकर, क्यों तू पाप कमाये।
रौद्र ध्यान करके अज्ञानी, नरकों में भरमाये॥
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं हिंसानंदी-रौद्रध्यान-विनाशनाय उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृषा बोल आनंदित होकर, क्यों करता नादानी।
मृषा त्याग से सम्यक् सुख हो, कहती श्री जिनवाणी।।
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं मृषानंदी-रौद्रध्यान-विनाशनाय उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर वस्तु के ग्रहण करन का, भाव चौर्य कहलाता।
चौर्यानन्दी रौद्र ध्यान तज, तू क्यों रुदन मचाता।।
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं चौर्यानंदी-रौद्रध्यान-विनाशनाय उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि बन आतम हित को साधूँ, तजूँ परिग्रह सारा।
विषय संरक्षण में सुख नाहीं, लहो धर्म का द्वारा।।
उत्तम त्याग धरम चित लाकर, जीवन सफल बनाऊँ।
शुद्ध हृदय से पूजन कर, निज आतम में रम जाऊँ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं विषयसंरक्षणानंदी-रौद्रध्यान-विनाशनाय उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

चउ विध दान करें अति उत्तम, त्याग धरम मनमांहि विचारैं।
धर्मामृत में चित्त रमाकर, निज आतम का रूप निहारैं।।
त्याग धरम मुनिनाथ जजैं, जिनमारग का उद्योत संवारैं।
भाव यही वृष त्याग सुउत्तम धार भजूँ वसु कर्म संहारै।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये सम्पूर्ण महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः

जयमाला

दोहा

त्याग धरम उत्तम कहा, सुख शांति आधार।
है स्वभाव मम् आत्म का, नमूँ त्याग वृष सार।।

चौपाई

त्याग रूप ही सकल जहाना, तरू धन नद सब त्याग समाना।
त्याग बिना सुख लहै न कोई, आत्म शुद्धि का साधन जोई।।1।।
श्रावक हो या मुनि की गरिमा, त्याग धरम से बढ़ती महिमा।
त्यागी सबमें पूज्य कहाता, त्यागी ही सम्मान है पाता।।2।।
चउविध त्याग हो श्रावक द्वारा, औषध, शास्त्र अभय आहारा।
गुण भूषण युत है जो दाता, उभय धर्म रक्षक वो त्राता।।3।।
त्याग बिना गुण प्रकट ना होई, त्याग करो तो दुःख ना कोई।
त्याग राग की आग बुझावै, भव संताप शीघ्र विनशावै।।4।।
आर्त्त रौद्र युत त्याग जु कीजै, उससे सम्यक काज ना सीजै।
त्याग का किंचित मान ना करना, मान त्याग आतम हित सरना।।5।।
नाम बढ़ावन त्याग निसारा, जिससे ना संबंध हमारा।
क्रोध मान छल लोभ से रीता, वही त्याग सर्वोत्तम मीता।।6।।
नमन जगत के साधुजन को, त्याग धर्म युत साधे मन जो।
यह उत्तम वृष भवि मन आया, तातै लहूँ शिवालय छाया।।7।।
त्याग जगत की कुटिल रीतियाँ, दूर रहें सर्वस्व भीतियाँ।
ज्ञानार्जन का यही सार है, बिना त्याग जीवन असार है।।8।।
राग द्वेष तज बन वैरागी, मम आतम हो उत्तम त्यागी।
त्यागूँ वसु कर्मों का बंधन, बनूँ त्रैलोक्य थाल शुभ चंदन।।9।।

दोहा

त्याग धरम उत्तम महा, सुख शांति आधार।
नर भव में ही त्याग कर, होते भव से पार।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमत्यागधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

त्याग धरम संभाल, पर परिणति से मोह तज।
तज विधि जंजाल, उत्तम सुख के कारणे।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

उत्तम आकिंचन धर्म

स्थापना

(आडिल्ल छंद) (तर्ज– सोलहकारण भाय तीर्थंकर.....)

उत्तम आकिञ्चन वृष पूज्य महान है।
परम दिगम्बर ही जिसकी पहचान हैं।।
पर द्रव्यों से न किंचित् संबंध हो।
आकिंचन युत मम जीवन निर्बंध हो।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम आकिंचन धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट्–(सन्निधिकरणम्)।।

(त्रिभंगी छंद) (तर्ज– वसु द्रव्य संवारी.....)

गंगानद का जल, ले अति निर्मल, तज सब चित मल, धारकरूँ।
त्रय रोग नशाऊँ, हर्ष बढ़ाऊँ, चित उमगाऊँ, सौख्य वरूँ।।
आकिंचन धर्मा, चेतन गरिमा, शरणा परमा गुणकारी।
शुभ पूज रचाऊँ, धरम सुध्याऊँ, कर्म नशाऊँ शिवकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।

चेतन अति सुरभित, केसर मिश्रित, भवि चित रंजित, घिस लाया।
गाऊं गुणमाला, पूज विशाला, नश भव ज्वाला, सुख पाया।।
आकिंचन धर्मा, चेतन गरिमा, शरणा परमा, गुणकारी।
शुभ पूज रचाऊँ, धरम सुध्याऊँ, कर्म नशाऊँ, शिवकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ शालि अखंडित, गुणगण मंडित, सुरगण वंदित, वृष अर्चूं।
लहि सौख्य महाना, सिद्ध समाना, धरम प्रधाना, नित चर्चूं।।
आकिंचन धर्मा, चेतन गरिमा, शरणा परमा, गुणकारी।
शुभ पूज रचाऊँ, धरम सुध्याऊँ, कर्म नशाऊँ, शिवकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

सुर तरु के न्यारे, सुरभित प्यारे, जन मन हारे, सुमन लिए।
जश काम अनोखा, चित कर चोखा, तजिकर शोका, पूज किए।।
आकिंचन धर्मा, चेतन गरिमा, शरणा परमा, गुणकारी।
शुभ पूज रचाऊँ, धरम सुध्याऊँ, कर्म नशाऊँ, शिवकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

नाना रस भीने, नेवज कीने, हाथ सु लीने, मन हरना।
जजि क्षुधा नशाई, परम दवाई, सुचिर सहाई, वृष शरणा।।
आकिंचन धर्मा, चेतन गरिमा, शरणा परमा, गुणकारी।
शुभ पूज रचाऊँ, धरम सुध्याऊँ, कर्म नशाऊँ, शिवकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम आकिंचनधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शुभ मणिमय कंचन, तेजमयी तन, दीपक अनुपम, ज्योति भरा।
वृष आरती गावैं, मोह नशावैं, ज्ञान सुपावैं, भव्य नरा।।
आकिंचन धर्मा, चेतन गरिमा, शरणा परमा, गुणकारी।
शुभ पूज रचाऊँ, धरम सुध्याऊँ, कर्म नशाऊँ, शिवकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

ले धूप मलयवन, खेय हुताशन, सुरभित तन मन, सुखकारी।
वृष नवम् जू धारे, गुण सु संवारे, कर्म संहारे, भवतारी।।
आकिंचन धर्मा, चेतन गरिमा, शरणा परमा, गुणकारी।
शुभ पूज रचाऊँ, धरम सुध्याऊँ, कर्म नशाऊँ, शिवकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

षट्ऋतु के उत्तम, फल सर्वोत्तम, ले भक्ति मन, पूज करें।
तब बढ़ता निज बल, पावें शिवफल, भक्तों का दल, मुक्ति वरे।।
आकिंचन धर्मा, चेतन गरिमा, शरणा परमा, गुणकारी।
शुभ पूज रचाऊँ, धरम सुध्याऊँ, कर्म नशाऊँ, शिवकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।

वसु द्रव्य मिलाये, शरणा लाये, शीश नवायें, भव्य मुनी।
वृष गुण जो गाये, अर्घ्यं चढ़ाये, निज पद पाये, नंत गुनी।।
आकिंचन धर्मा, चेतन गरिमा, शरणा परमा गुणकारी।
शुभ पूज रचाऊँ, धरम सुध्याऊँ, कर्म नशाऊँ, शिवकारी।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम आकिंचन धर्म अर्घावली

(छंद : चउ बोला) (तर्ज– धीरे धीरे पगियाँ धरती.....)

चार कषाय नोकषाय अरु, मिथ्यातम से दूर रहे।
अंतरंग के सर्व संग बिन, मुनि उर निर्मल ज्ञान बहे।।
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशविध–अंतरंगपरिग्रहत्याग रूप–उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

क्षेत्र परिग्रह के त्यागी मुनि, आत्मक्षेत्र अवगाह करें।
सर्व भूमि से नेह घटाकर, वसु वसुधा की चाह धरें।।
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

ऊँचा सुंदर भवन भी जिनको, लुभा लुभा कर है हारा।
लेकिन मुनिवर को मन भाये, मोक्ष महल जग से न्यारा।।
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं वास्तुपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रहें रजत में रत ना किंचित, आत्म निरत रहते स्वामी।
हो विरक्त सब तन मन धन से, बनूँ मुनी सम निष्कामी।।
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

स्वर्णाभरण का त्याग किया, पर सोने सा दिखता है तन।
रत्नत्रय से हुए विभूषित, शुद्ध किया है अपना मन।।
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

रुपया पैसा धन दौलत अरु, रत्न आदि सब नश्वर है।
गोधनादि भी परिग्रह तजकर, लहते पद अविनश्वर हैं॥
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं धनादिपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

गोधूम जौ चणक बाजरा, दाल आदि सब धान्य दिखे।
अविनश्वर पद पाने यतिवर, त्यागै बैन जो शास्त्र लिखे॥
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं धान्यपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दूती दासी महासेविका, धात्रि पालिका अम्बा सी।
सभी सेविका तन को पोषै, चेतन समता रम्भा सी॥
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं दासीपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

नौकर सेवक दूत दास अरु, चाकर सभी हवाली जो।
चित्त विशुद्धि में निमित्त ना, त्याग वरो शिव आली जो॥
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं दासपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

अन्तर बाहिर अधो उपरि जो, वस्त्र देह को शृंगारैं।
यथा दिगंबर मुनि अचेलक, समता चीर सदा धारैं।।
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुप्यपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

लघु वृहद् बहु इतर मूल्य के, वरतन का कुछ काम नहीं।
एक भुक्ति हेतु करतल ही, श्रमणराज को लगे सही।।।
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाण्डपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

द्रव्य भाव नोकर्म रहित नित, शुद्धातम का ध्यान करें।
स्वातम की उपलब्धि हेतु, मुनि आकिंचन भाव धरैं।।
उत्तम आकिंचन वृष धारी, सुरनर गण से पूज्य सदा।
ऐसे मुनि को नमस्कार कर, मोह भाव ना रहे कदा।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयकर्मरहिताय-स्वात्मोपलब्धयै उत्तमआकिंचनधर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

समुच्चय महार्घ्य

(तर्ज– वीर हिमाचल तै निकसि.....)

अन्तर बाहिर संग तजूँ अरु, आतम का शुभ ध्यान लगाऊँ।
धार दिगंबर भेष चलूँ, वसु कर्मन के सब बंध नशाऊँ।।
उत्तम आकिंचन वृष धारूँ, पर द्रव्यन से नेह हटाऊँ।
शुद्ध हृदय से आराधन कर, सिद्ध स्वरूपी आनंद पाऊँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वपरिग्रहत्यागरूप-उत्तमआकिंचनधर्मांगाय सम्पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप्यमंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय नमः।

जयमाला

दोहा

आकिंचन वृष है विमल, शाश्वत मुक्ति द्वार।
परम दिगम्बर मुनिन का, नमूँ धरम गुणसार।।

चौपाई

आकिंचन वृष उत्तम माना, आत्मसिद्धि का यही ठिकाना।
जो उपांत लक्षण वृष धारें, सो शिवमारग शीघ्र संवारें।।1।।
भीतर बाहर जो निर्ग्रंथी, खुलती उनकी सारी ग्रंथीं।
हो इच्छा रोगों से मुक्ति, जो करते आकिंचन भक्ति।।2।।
धीर वीर करते आराधन, आकिंचन वृष ही शिव साधन।
इह वृष युत कहलाते ज्ञानी, मोक्ष पुरी की ये रजधानी।।3।।
तन धन कंचन वैभव सारा, ममता मोह से करो किनारा।
आकिंचन वृष निज चित धारो, आतम हित की बात विचारो।4।।
ज्ञानवान दृढ़ प्रीति दिखावैं, रागी भय युत हो मुरझावै।
जो प्रकाश रवि शशि के मांहि, नश्वर जुगनू में तो नाहीं।।5।।
सर्व परिग्रह ममत निवारो, आकिंचन्य धरम उर धारो।
नगन भेष सुर वंदित वाना, सर्व सुखों का यही खजाना।।6।।
आकिंचन्य महाव्रत धारूँ, अपना आतम धरम संवारूँ।
नर भव की ये उत्तम करनी, ये ही नौका भवदधि तरणी।।7।।

सोरठा

पर से मोह घटाय, आतम हित नित आदरै।

सकल करम विनशाय, जो नर आकिंचन भये।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमआकिंचनधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

आकिंचन वृष सार, त्रिभुवन में दुर्लभ कहा।

परिग्रह चौदह प्रकार, तज ममत्व शिव पद लहूँ।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

स्थापना

(छंद– गीतिका/हरिगीतिका) (तर्ज– मैं देव श्री अरिहंत पूजूँ.....)

निज आतमा का भोग उत्तम, ब्रह्मचर्य प्रधान है।
वेदी नशे वसु कर्म की, जो ब्रह्म अस्त्र समान है॥
अठदश सहस विध भेद जाके, धारि भवि शिव सुख लिया।
उर धारि श्रद्धा भाव पूजन, हेत शुभ थापन किया॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्य धर्म! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥ अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)॥

(छंद–ज्ञानोदय) (चाल-वंदे जिनवरं.....॥)

सुर सरिता का उत्तम जल ले, कंचन घट भर लाये हैं।
जन्म जरा मृत्यु विनशाने, वृष पूजन को आये हैं॥
ब्रह्मस्वरूपी मेरा चेतन, ब्रह्मचर्य से पोषित हो।
शील सूर्य की तीक्ष्ण किरण से, भव वारिध भी शोषित हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

चंदन अरु कर्पूर सुमिश्रित, दिव्य सुगंध बनाया है।
भव भव के संताप शमित हों, धर्म पंथ अपनाया है॥
ब्रह्मस्वरूपी मेरा चेतन, ब्रह्मचर्य से पोषित हो।
शील सूर्य की तीक्ष्ण किरण से, भव वारिध भी शोषित हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय संसारतापविनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

अक्षत से वृष पूजक जग में, अक्ष विजेता बन जाते।
अक्षय पद को प्राप्त करें, फिर भव में गोते ना खाते॥
ब्रह्मस्वरूपी मेरा चेतन, ब्रह्मचर्य से पोषित हो।
शील सूर्य की तीक्ष्ण किरण से, भव वारिध भी शोषित हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।

विषय भोग की सुरा मनुज को, भव भव भ्रमण कराती है।
सुर पुष्पों से अर्चूं नित तो, काम व्यथा नश जाती है॥
ब्रह्मस्वरूपी मेरा चेतन, ब्रह्मचर्य से पोषित हो।
शील सूर्य की तीक्ष्ण किरण से, भव वारिध भी शोषित हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।

क्षुधा वेदनी की पीड़ा में, प्राणी अति अकुलाया है।
उत्तम चरु ले अर्चूं सच्चे, सुख का पथ बतलाया है॥
ब्रह्मस्वरूपी मेरा चेतन, ब्रह्मचर्य से पोषित हो।
शील सूर्य की तीक्ष्ण किरण से, भव वारिध भी शोषित हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

कंचन दीपों की आवलियों, से वृष आरति हम करते।
शील धरम चित धारे जो जन, मोह तिमिर वो झट हरते॥
ब्रह्मस्वरूपी मेरा चेतन, ब्रह्मचर्य से पोषित हो।
शील सूर्य की तीक्ष्ण किरण से, भव वारिध भी शोषित हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।

धूप दशांगी कर में लेकर, धूपायन मैं खेऊँगा।
वसु विधि बंधन तज स्वतंत्र हो, वसुगुण निश्चित सेऊँगा।।
ब्रह्मस्वरूपी मेरा चेतन, ब्रह्मचर्य से पोषित हो।
शील सूर्य की तीक्ष्ण किरण से, भव वारिध भी शोषित हो।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।

वृष पूजन की सार्थकता जब, धरम रूप निज रम जाऊँ।
यही भाव ले शिवफल हेतु, उत्तम फल ले गुणगाऊँ।।
ब्रह्मस्वरूपी मेरा चेतन, ब्रह्मचर्य से पोषित हो।
शील सूर्य की तीक्ष्ण किरण से, भव वारिध भी शोषित हो।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय मोक्षफलप्राप्तयेफलं निर्वपामीति स्वाहा।।

वसु द्रव्यों का मिश्रण लेकर पूज रचा मंगल गायें।
पद अनर्घ को पाने हम भी पर्वराज को सिर नायें।।
ब्रह्मस्वरूपी मेरा चेतन, ब्रह्मचर्य से पोषित हो।
शील सूर्य की तीक्ष्ण किरण से, भव वारिध भी शोषित हो।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म अर्घावली

(छंद– सवैया तेईसा)

(तर्ज-सोलहकारण पूजन की 16 अर्घावली.../वीर हिमाचल तै निकसि...)

काय स्वभाव का चिंतन करके, दूर करें सब कारज खोटे।
ब्रह्मस्वरूपी चर्या जिनकी, वे मुनि पर में लीन ना होते।।
उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायकृतब्रह्मरहिताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

वचन झरैं जैसे अमृत झरना, अधरों पर रहती जिनवाणी।
वैन अधम न मुख तैं उचरैं, ब्रह्म वाक्यमय जिनकी कहानी।।
उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचनकृत-अब्रह्मरहिताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

बालक वत अविकारी मुनिवर, मन में खोटे विचार न लावैं।
निर्मल चित् दर्पणवत् जिनका, उन पद में नित शीश झुकावैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन:कृत-अब्रह्मरहिताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

खुद करते न पर से कराते, दुष्कृत काया से दुखकारी।
शील खडग से कर्म संहारे, सुर वंदित वे शील पुजारी।।

उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायकारित-अब्रह्मरहिताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जो पापों में प्रवृत्त कराये, ऐसे अविकारी वच त्यागैं।
धर्म का दें उपदेश मुनिजन, जिनके दर्शन से अघ भागैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचःकारित-अब्रह्मरहिताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

भव वर्धक अघकारक कारज, में मुनिजन मन समता धारैं।
श्री अरिहंत गुणों का चिन्तन, करके आतम शील संवारैं।।
उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनःकारित-अब्रह्मरहिताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

त्याग सभी विषयों के विष को, तन से ना किंचित मोदन करते।
सत्य क्षमा गुण शील दया से, मुनि नित आतम कोष हैं भरते।।
उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं कायानुमोदन-अब्रह्मरहिताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

चिर परिचित भोगों को तजते, जैसे हों इनसे अनजाने।
वच अनुमोदन से हो विरक्त मुनि जिन वचनों के दीवाने।।

उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं वचनानुमोदन-अब्रह्मरहिताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जल की निर्मलता से भी निर्मल, मुनि मन का ये निर्मल झरना।
नश्वर भोगों को तज जिनको, आता है चित पावन करना।।
उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनःअनुमोदन-अब्रह्मरहिताय उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शील सदा सुखकारक जग में, आतम को शिवपथ दर्शावै।
ब्रह्मचर्य महाव्रत मुनिजन का, तन मन चेतन शुद्ध करावै।।
उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्यमहाव्रतप्राप्तये उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सहस अठारह दोष रहित, व्रतशील सुशोभित श्री अरिहंता।
चेतन का यही भोग सुउत्तम, भोगके हो भविजन शिवकंता।।
उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशसहस्रशीलदोषरहिताय उत्तमशीलधर्म ब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

उत्तम ब्रह्मचर्य वृष अनुपम, आतम को परिशुद्ध बनाता।
सर्व दोष अपहारिक वृष की, गुण महिमा कहि शीश नवाता।।

उत्तम ब्रह्मचर्य वृष पालन, नव कोटि युत जो नर करते।
चेतन के वसु गुण निधि पाकर, शाश्वत मुक्ति वधु को वरते।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धचैतन्यस्वरूपसहजस्वभावप्राप्तये उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

समुच्चय महार्घ्य

(छंद– सवैया तेईसा) (तर्ज– वीर हिमाचल तै निकसि.....)

शील सदा निज आत्म संरक्षक, चेतन का गुण कोष बढ़ावैं।
मन वच तन कृत कारित मोदन से, धर शील स्वपर को दृढ़ावै।।
पाप ताप संताप हरैं अरु, शिवपुर की निधियाँ दर्शावै।
ब्रह्मचर्य वृष उत्तम पूजूँ, श्री अरिहंत परम पद पावैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय समुच्चय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप : ॐ ह्रीं अर्हं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः।।

जयमाला

दोहा

शीलवान की जगत में, बड़ी निराली शान।
सुर नर खगपति मिल सभी, करते नित सम्मान।

छंद पद्धरि

वृष शील सिद्धथल मग प्रधान, अरु सर्व लोक मांहि प्रधान।
आत्मोन्नति का ये चिह्न जान, वृष शील नमूँ उर भक्ति ठान।।1।।
नर भव में ही वर शील होय, अन्यत्र धरें न शक्ति कोय।
है शील आत्म संगीतगान, वृष शील नमूँ उर भक्ति ठान।।2।।
है ब्रह्मचर्य सर्वोच्च शस्त्र, नाशे कर्मन बेड़ी प्रकृष्ट।
भव तारक ये ही परम यान, वृष शील नमूँ उर भक्ति ठान।।3।।
आतम प्रवेश का मुख्य द्वार, देवे जो अनुपम सुख अपार।
करता जो सब अघ दुष्ट हान, वृष शील नमूँ उर भक्ति ठान।।4।।

ये शील सती द्रोपति सुधार, तस चीर बढ़ो फलरूप सार।
यश फैला सती का थान थान, वृष शील नमूँ उर भक्ति ठान।।5।।
वो शीलवती सीता सूनारि, हुई अगनि मांहि बहु नीर धार।
भई कमलासन पे विराजमान, वृष शील नमूँ उर भक्ति ठान।।6।।
नीली सोमा इत्यादि जोय, संकट में सुर सुसहाय होय।
है शील धरम महिमा महान, वृष शील नमूँ उर भक्ति ठान।।7।।
जय विजय आदि लाखों सुवीर, असि धारा व्रत धर भये धीर।
सुर जिनकी पूजा करी आन, वृष शील नमूँ उर भक्ति ठान।।8।।
धर ब्रह्मचर्य उत्तम स्वरूप, पाऊँ शाश्वत चिद् ब्रह्मरूप।
होवें सब सिद्धों बीच थान, वृष शील नमूँ उर भक्ति ठान।।9।।

दोहा

ब्रह्मरूप निज आतमा, नंत गुणों का धाम।
पूर्ण ब्रह्म युत सिद्ध जिन, करूँ शुद्ध परिणाम।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अनर्घपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सोरठा

अंतिम लक्षण ठान, अंत करूँ सब जनम का।
अंतिम भू विश्राम, हो अनंत गुण युत सदा।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

समुच्चय जयमाला

दोहा

दसलक्षण संयुक्त हो, मम हर आत्म प्रदेश।
अजर अमर अविचल लहूँ, सिद्ध स्वरूपी भेष॥

चौपाई

क्षमा धर्म का पीकर प्याला, शत्रु भाव की नशती ज्वाला।
जप तप कोटि पूज से बढ़कर, क्षमा भाव धारो सब जन पर॥1॥
उत्तम मार्दव गुण को लाता, देता सब संकट में साता।
विनयवान सद्गुण का सागर, सर्वऋद्धि सिद्धि का आकर॥2॥
आर्जव रीति सुख विस्तारे, भव संकट से शीघ्र निवारे।
आर्जव शिव सुख पंथ सहाई, सरल सुभाव धरो मन लाई॥3॥
उत्तम शौच धरम अघहारी, संतोषी शिवसुख विस्तारी।
लोभ पाप मूलक दुखकारी, तजो गहो वृष शौच सुखारी॥4॥
सत्य धरम सब आपद टाले, दुर्गुण नश सद्गुण को पालें।
सत्य समान धरम नहीं कोई, धारे जो पुरुषोत्तम होई॥5॥
संयम शिवमग अर्गल नाशै, आत्मगुणों को सदा प्रकाशै।
इंद्रिय अरु मन करें नियंत्रण, दया भाव से द्रवित रहे मन॥6॥
तप वृष दिवसनाथ सम न्यारा, कर्म उदधि का सोखनहारा।
तप की ज्योति जिस भवि जागी, वो नर सुर वंदित बड़भागी॥7॥
त्याग राग की आग बुझावे, करम बंध से हमें बचावें।
त्याग मुनिन को लागे प्यारा, भवदधि जल से काढ़नहारा॥8॥
उत्तम आकिंचन मन लाओ, पर परिणति को दूर भगाओ।
परिग्रह चार बीस विध त्यागैं, निज आतम रस में चित पागै॥9॥

ब्रह्मचर्य सद्बोध प्रकाशक, सुखवर्धक दुर्गति का नाशक।
विषय विकार विभाव नशाता, निज स्वभाव से प्रीति लगाता।।10।।
इह विधि दस लक्षण चित धारो, नर तन रतन अमोल संवारो।
व्रत पूजन कर मन हर्षाई, जनम जनम के पाप नशाई।।11।।
गुरुवर वसुनंदी गुणधारी, लही प्रेरणा नित उपकारी।
पाकर शुभ आशीष निराला, रचा भक्ति रस का ये प्याला।।12।।

दोहा

दस लक्षण हैं धर्म के, त्रिभुवन मांही सार।
मन वच तन से नित जजूँ, धर्म स्वात्म आधार।।

सोरठा

आतम शुद्धी हेत, उत्तम क्षमादि धर्म दस।
पाऊँ मुक्ति निकेत, प्रज्ञानंद मुनि निज जजैं।।

शांतये शांतिधारा... पुष्पांजलि क्षिपामि

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ, साधू पूजूँ भाव सों॥
अरहन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी॥

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावनाषोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥

कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जप, होय पति शिव गेह के॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारितानुमोदनैः सहितं श्री अरिहन्त-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल-थल-आकाश-गुहा-पर्वत-नगरवर्ति-ऊर्ध्व-मध्य-अधोलोकेषु विराजमान- कृत्रिम-अकृत्रिम-जिन-चैत्यालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान-विंशतितीर्थङ्करेभ्यो नमः। पञ्च-भरत-पञ्च-ऐरावत-

दशक्षेत्र-सम्बन्धि-त्रिंशत्-चतुर्विंशतिगत-विंशत-उत्तर-सप्तशत-जिनबिम्बेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप-सम्बन्धि-द्वीपञ्चाशत् जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धि-अशीति-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर-कैलाश-चम्पापुर-पावापुर-गिरनार-सोनागिरि-राजगृही-मथुरा-शत्रुञ्जय-तारङ्गा-कुण्डलपुर आदि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-चन्देरी-पपौरा-अयोध्या-चमत्कारजी-महावीरजी-पद्मपुरी-तिजारा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः श्रीचारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपावतं श्रीवृषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थङ्करपरमदेवं आद्यानां जम्बूद्वीपे मेरु दक्षिण भागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे....नाम्नि नगरे....मासानामुत्तमे...मासे....पक्षे....तिथौ.....वासरे.... मुन्यार्यिका-श्रावक- श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति-पाठ (भाषा)

चौपाई

शांतिनाथ मुख शशि-उनहारी, शील-गुण-व्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं॥
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति-हित शांति विधायक॥

दिव्य विटप बहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को॥

(वसन्ततिलका)

पूजै जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके॥
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप।
मेरे लिए करहुँ शान्ति सदा अनूप॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे॥

(स्रग्धारा)

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहें, व्याधियों का अंदेशा॥
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी॥

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज॥

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का॥
बोलूँ प्यारे वचन हित के आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ॥

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने॥

अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से।
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

क्षमापना

(दोहा)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥१॥
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान्।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहु भगवान॥२॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥३॥
आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति-प्रमाण।
ते अब जावहुँ कृपा कर, अपने-अपने धाम॥४॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप एवं गवासन में बैठकर नमस्कार करें।)

पर्युषण पर्व महिमा

(तर्ज– श्री सिद्ध चक्र का पाठ.....)

पर्युषण पर्व महान, करे कल्याण, भविक मन लाई।
सब जन मिल पूज रचाई।टेक।।
ये पर्व सुरासुर वंदित है, नरपति गणपति अभिनंदित है।
अर्चन कर भवि का जनम मरण नश आई।।
सब जन मिल पूज रचाई।।1।।
उत्तम क्षमादि दस धर्म प्रमुख, आतम को देते शाश्वत सुख।
भव दु:ख से तारक धर्म हो सदा सहाई।।
सब जन मिल पूज रचाई।।2।।
वृष क्षमा क्रोध अरि नाशक है, मार्दव मद मर्दक शासक है।
छल कपट विनाशक आर्जव वृष अपनाई।।
सब जन मिल पूज रचाई।।3।।
धर शौच भाव चित शुद्धि हो, सत संयम मय मम बुद्धी हो।
तप कर कर्मों के मैल तुरंत नश जाई।।
सब जन मिल पूज रचाई।।4।।
लहि भेष दिगंबर आकिंचन, हो ब्रह्मचर्य से मम सिंचन।
दस लक्षण भज, निज आत्म ज्योति प्रकटाई।।
सब जन मिल पूज रचाई।5।।

ऋषि मुनियों का ये आभूषण, सब दूर करें आतम दूषण।
शिवरमणी के संग उनकी होत सगाई॥
सब जन मिल पूज रचाई॥6॥
दस धर्म हैं आतम के लक्षण, शोभित हो इनसे हर कणकण।
इस धर्म बिना न इक पल व्यर्थ गंवाई॥
सब जन मिल पूज रचाई॥7॥
सुदि माघ चैत भादव महिमा, मुनि सुर श्रावक गावें महिमा।
दस दिन इनकी विधिवत शुभ पूज रचाई॥
सब जन मिल पूज रचाई॥8॥
व्रत पूज करें मन वच तन से, वो छूट जाए भव कानन से।
आगम में इनकी कथा सुविस्तृत गाई॥
सब जन मिल पूज रचाई॥9॥
पाया सुयोग वश ये नर तन, गुरु वसुनंदी के दिव्य वचन।
जिनका शुभ आशीष पा वृष पूज रचाई॥
सब जन मिल पूज रचाई।10॥
हो धर्मामृत सिंचित जीवन, हो जिनपथ में मम सब अर्पण।
गुरु चरणों में मम अंत श्वांस रुक जाई॥
सब जन मिल पूज रचाई॥11॥
पर्यूषण पर्व महान करे कल्याण, भविक मन लाई।
सब जन मिल पूज रचाई।टेक॥

श्री दसलक्षण पर्व आरती

(तर्ज– भक्ति अपरम्पार है.....)

पर्यूषण त्यौहार है, आनंद अपार है।
जग कल्याणी दस लक्षण की, आरती बारंबार है।
पर्व समय में जिन मंदिर की, शोभा बड़ी निराली है।
भक्ति रस में भींगे भवि मन, कर आरति की थाली है॥
खुशियाँ अपरंपार हैं, उत्साह का भंडार है।
जग कल्याणी दस लक्षण की, आरती बारंबार है॥1॥
दस धर्मों के अनुपम मोती, की माला जो धारेंगं।
निज आतम श्रंगार करें, अरु शिवरमणी परणायेंगे॥
सिद्धी का आधार है, सिद्धालय का द्वार है।
जग कल्याणी दस लक्षण की, आरती बारंबार है॥2॥
उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप त्याग।
आकिंचन अरु ब्रह्मचर्य वृष, इनमें रक्खें हम अनुराग॥
आतम का श्रंगार है, सर्व सौख्य आगार है।
जग कल्याणी दस लक्षण की, आरती बारंबार है॥3॥
तीर्थंकर ने दस धर्मामृत, पान किया तब शिव पाया।
धर्म रसिक बन कर्म संहारें, मन में आज यही आया॥
कर्म गिरि का भार है, उसके लिए कुठार है।
जग कल्याणी दस लक्षण की, आरती बारंबार है॥4॥
दिव्य दीप के थाल सजाकर जिन मंदिर में आए हैं।
वसुनंदी गुरुवर की प्रेरणा से, ये भाव जगाए हैं॥
जिनवाणी का सार है, जगमग ज्योति अपार है।
जग कल्याणी दस लक्षण की, आरती बारंबार है॥5॥

निर्वाणकांड (भाषा)

कवि श्री भैया भगवतीदास जी

(दोहा)

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय।
कहौं कांड-निर्वाण की, भाषा-सुगम बनाय॥1॥

(चौपाई छंद)

'अष्टापद' आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य 'चंपापुरि' नामि।
नेमिनाथ स्वामी 'गिरनार', वंदौ भाव-भगति उर-धार॥2॥
चरम-तीर्थंकर चरम-शरीर, 'पावापुरि' स्वामी-महावीर।
'शिखर-सम्मेद' जिनेश्वर बीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥3॥
वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
'नग सु तारवर' मुनि उठकोड़ि, वंदौं भाव-सहित कर-जोड़ि॥4॥
श्री 'गिरनार'-शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्भु-प्रद्युम्न कुमर द्वय भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय॥5॥
रामचंद्र के सुत द्वय वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति-मँझार, 'पावागढ़' वंदौं निरधार॥6॥
पांडव-तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री 'शत्रुंजय-गिरि' के सीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥7॥
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्री 'गजपंथ' शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँकाल॥8॥
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, 'तुंगीगिरि' वंदौं धरि ध्यान॥9॥

नंग-अनंगकुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये 'सोनागिरि' शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईश॥10॥
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये 'रेवा-तट' सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम-हुलास॥11॥
रेवानदी 'सिद्धवर-कूट', पश्चिम-दिशा देह जहँ छूट।
द्वय-चक्री दश-कामकुमार, उठकोड़ि वंदौं भव-पार॥12॥
'बड़वानी' बड़नयर सुचंग, दक्षिण-दिशि 'गिरि-चूल' उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भवसायर-तर्ण॥13॥
सुवरणभद्र आदि मुनि चार, 'पावागिरिवर' शिखर-मँझार।
चेलना-नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास॥14॥
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम-दिशा 'द्रोणगिरि' रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ॥15॥
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री 'अष्टापद' मुक्ति-मँझार, ते वंदौं नित सुरत-संभार॥16॥
अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ 'मेंढ़गिरि' नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित-लाय॥17॥
वंसस्थल-वन के ढिंग होय, पच्छिम-दिशा 'कुंथुगिरि' सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम॥18॥
जसरथ-राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
'कोटिशिला' मुनि कोटि-प्रमान, वंदन करूँ जोड़ जुग पान॥19॥
समवसरण श्री पार्श्व-जिनंद, 'रेसिंदीगिरि' नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज॥20॥
'मथुरापुरी' पवित्र-उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरम-केवली पंचमकाल, ते वंदौं नित दीनदयाल॥21॥

तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित-प्रति वंदन कीजे तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय॥22॥
संवत सतरह-सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल॥23॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घावली

वीतराग जिनगिरि से निसृत द्वादशांग जिनवर वाणी,
गणधर सूरी ज्ञान कुण्ड से झरती पीते भवि प्राणी।
मुनिराजों ने जिन्हें स्वयं ही शब्दों में लिपिबद्ध किया,
प्रथम चरण अरु करण द्रव्य को अर्घ चढ़ा हम नमन किया॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव द्वादशांग मय सरस्वती देव्यैः नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उन आचार्यों के चरणों में, झुका रहे अपना माथा।
जिनकी अमृतवाणी सुनकर, हो जाता निज से नाता॥
षट्खण्डागम आदि सिद्धांतों, को जिनने लिपिबद्ध किया।
पुष्पदंत, धरसेन, भूतबली आचार्यों से ज्ञान लिया॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आचार्य भगवन् श्री-धरसेन-पुष्पदंत-भूतबलि परमेष्ठिभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आध्यात्मरसिक सिद्धान्त मनीषी आगम के मर्मज्ञ महान,
परम तपस्वी अविचल ध्यानी निजानंद करते रसपान।
निज आतम कल्याणहेतु हम करते पूजन अरु गुणगान,
कुंद कुंद आचार्य श्री को नमन करूँ जो हैं भगवान॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्मरसिक आचार्य भगवान् श्री कुंद कुंद स्वामिने अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम तपस्वी शांति सिंधु मुनि पंचम युग में तीर्थ समान,
तीर्थंकर वत् कलिकाल में जिनशासन का कर यशगान।
चक्रवती चारित्र शिरोमणि भव्यों को सत्यार्थ प्रमाण,
तीन भक्ति युत अर्घ चढ़ाऊँ पाने को समकित वरदान॥

ॐ ह्रूँ परमात्मा चारित्र चक्रवर्ती आचार्य भगवत श्री शांतिसागरजी मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भव तन भोग भोग विरागी हे गुरु ज्ञान ध्यान तप लीन महान,
विषय वासना अरु कषाय से रिक्त चित्त जिनका अमलान।
पायसिन्धु को पाकर हम सब शिवमग पावें विषय नशाय,
ऐसे उत्तम मुनिपद पंकज अर्घ चढ़ाकर शीश नवाय॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य परम तपस्वी आचार्य भगवन् श्री पायसागर मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष विजेता मन के जेता सूरीवर जयकीर्ति प्रधान,
निर्विकल्प शुभ ध्यान पायकर पाया निज आतम का ज्ञान।
भाव सहित गुरु भक्ति पूजा करती पाप कर्म की हान,
जल फलादि वसु अर्घ चढ़ाकर पाएं हम भी उत्तम ज्ञान॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्म योगी आचार्य भगवन् श्री जयकीर्ति मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराजों में आप प्रमुख हैं सूरीवर जो कहलाते,
भारत गौरव जिनवृष सौरभ मार्ग धर्म का बतलाते॥
रत्नत्रय से आप विभूषित गुरू देश भूषण स्वामी,
भक्तियुत शुभ अर्घ चढ़ाकर बन जाऊँ मैं निष्कामी॥

ॐ ह्रीं परमपूज्य भारगतौरव आचार्य भगवन् श्री देशभूषण मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाकर कंचन थाल भराये हैं,
निज आतम के वसु गुण पाने तव पद आज चढ़ाये।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणीमात्र हितकारी हो,
सिद्ध-शास्त्र-आचार्य भक्ति युत नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-ध्यान-तप लीन निरन्तर समता रस के भोगी हैं,
विषय वासना पाप रहित निर्ग्रन्थ मुनीश्वर योगी हैं।
वसुधा के वसु द्रव्य संजोकर वसु गुण पाने आये हैं,
वसुनंदी आचार्य प्रवर को अर्घ चढ़ा हर्षाये हैं।

ॐ ह्रूँ प.पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी गुरुवर की पूजन

स्थापना (तर्ज–श्रीमत् वीर हरें....)

सूरिवर श्री शांतिसागर, पाय जयकीर्ति गुण धारी,
श्री देशभूषण भारत गौरव, सूरिवर यश जिनका भारी
सितपिच्छी धारी श्री विद्यानंद के नंदन जय हो तुम्हारी,
वसुनंदी गुरुदेव पधारो, उर में है ये विनय हमारी॥

ॐ ह्रूँ आचार्यश्री वसुनंदी मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्॥ अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणम्)॥

अष्टक (तर्ज-रोम रोम से....)

निर्मल जल निर्मल जल चित हेतु, गुरु चरणों में लाए।
वचनामृत तव प्यास बुझाता, अतः शरण में आए॥
पूजन करने आये अलिवत्, तव पद के अनुरागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥1॥

ॐ ह्रूँ आचार्यगुरुवरश्रीवसुनंदिमुनीन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीत ऊष्ण वा क्षुधा तृषादिक, कठिन परीषह सहते।
क्रोध आदि की नहीं ऊष्णता, अनुपम शीतल रहते॥
चंदन से अति शीतल गुरुवर, निश्छल सरल स्वभावी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥2॥

ॐ ह्रूँ आचार्यगुरुवरश्रीवसुनंदिमुनीन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग में रहकर के भी, क्षरातीत गुण ध्यायें।
पुरुषार्थी निज अक्षय पद के, अक्षत पूज रचायें।।
गुरुदेव तव सम बनने की, मेरी प्रीत भी जागी।।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी।।2।।

ॐ ह्रूँ आचार्यगुरुवरश्रीवसुनंदिमुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म गुणों की अनुपम सुरभि, लें आनंद मनायें।
पुष्प से कोमल गुरु चरणों में, पुष्प चढ़ा हर्षायें।।
नहीं काम अब रहा काम से, अतः लगन मम लागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी।।3।।

ॐ ह्रूँ आचार्यगुरुवरश्रीवसुनंदिमुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय उपवास आदि भी, समता युत हो सहते।
बाधा के तूफानों में भी, नहीं कभी कुछ कहते।।
चरुवर से पूजें समता रस, पाएँ परम प्रभावी।।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी।।4।।

ॐ ह्रूँ आचार्यगुरुवरश्रीवसुनंदिमुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म गुणों के अन्वेषक, वैज्ञानिक अनुपम ज्ञानी।
तव प्रयोगशाला-प्रयोग, करते विस्मित हे ध्यानी।।
दीप चढ़ाकर ज्ञान दीप की, आशा मम मन जागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी।।5।।

ॐ ह्रूँ आचार्यगुरुवरश्रीवसुनंदि मुनीन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविध कर्मों को दहकाने, वेष दिगम्बर धारा।
वातावरण आपके गुण से, हुआ सुगंधित सारा॥
उसी गंध से हम खिंच आए, तव पूजन को त्यागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥6॥

ॐ ह्रूँ आचार्यगुरुवरश्रीवसुनंदिमुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन रत्न बहुमूल्य धार, तुम सर्वश्रेष्ठ कहलाये।
देव इंद्र नर असुर सभी मिल, तव गुण गौरव गाये॥
रत्नत्रय पा तुम सम मुनि, बनने की भावना जागी।
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥7॥

ॐ ह्रूँ आचार्यगुरुवरश्रीवसुनंदिमुनीन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम ध्यानी तव अंतर में, ज्ञान सिंधु लहराता।
मूलाचार के हो दर्पण, चारित्र यही बतलाता॥
तीर्थंकर सी सूरत जिनकी, गुरु सिद्ध जो भावी॥
वसुनंदी के पूजक जग में, कहलाते बड़भागी॥8॥

ॐ ह्रूँ आचार्यगुरुवरश्रीवसुनंदिमुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी गुरु, सरल स्वभावी आप।
श्रमण गगन के हो मिहिर, हरे पाप संताप॥
श्री वसुनंदी गुरु के चरणों में, अपना शीश झुकाता हूँ,
भक्ति से प्रेरित होकर के, गुरु गौरव गाथा गाता हूँ।
चारित के हिमगिरि हो अकंप, निश्चल मेरु से खड़े हुये,
बाधाओं के तूफानों में भी संयम हेतु अड़े हुये॥1॥

देख दिगम्बर चर्या को, मन श्रद्धा से झुक जाता है,
संयम के शिखर पुरुष गुरुवर, तेरा तप चित्त लुभाता है।
मिशरी से भी मीठी वाणी, जादू सब पर कर जाती है,
स्याद्वादमयी निर्दोष ज्ञान से पूर्ण, सभी को भाती है।।2।।
विद्वत्ता और तपस्या का शुभ संगम दुर्लभ ही जानो,
गुरु श्रेष्ठ तपस्वी ज्ञानवान्, प्रभुवर की मूरत ही मानो।
दर्शन कर मन में भाव उठे, तीर्थंकर जगती पर होते,
वो तुमसे ही दिखते होंगे, जो धर्म बीज जन-जन बोते।।3।।
मुस्कान खिले चेहरे पर जब भक्तों की दृष्टि जाती है,
सब के चित को मोहे तत्क्षण, खुशियाँ सबके मन छाती है।
तेरे शुभ चरण जहाँ पड़ते, स्थान तीर्थ वह बन जाता,
हो समवशरण सा लगा हुआ, दर्शन कर मन भी भर जाता।।4।।
सम्यग्दर्शन गुरु की भक्ति, प्रवचन सुज्ञान कहे जग में,
अनुसरण करें तेरे पथ का, संयम के भाव जगे मन में।
तुमसे संयम का परिपालन, तुमसे आनंद मयी वृष्टि,
तुम से ही है सारी विद्या, तुम में ही है मेरी सृष्टि।।5।।
शब्दों की सीमा में गुरु को, बाँधू दुस्साहस है मेरा,
आकाश समा निर्लेप शुभ्र, अनुपम व्यक्तित्व गुरु तेरा।
हे देव! न हो मुक्ति जबलौं तबलौं हमको तव चरण मिले,
भव-भव में तेरे चरणों में, श्रद्धा संयम के पुष्प खिले।।6।।

ॐ ह्रूं आचार्यगुरुरवश्रीवसुनंदिमुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

गुरुवर अभिनंदन, संयम वंदन, है ऐसा मैंने जाना,
हे संयम दाता, मम मन त्राता, तुमसे निज को पहचाना।।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

शांतये शांति धारा....।।